

يَبْنِي إِسْرَائِيلَ أَذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ
عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَعَةٌ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ * وَإِذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ
فَاتَّمَّهُنَّ ۗ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۗ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۗ
قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٤﴾ وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً
لِلنَّاسِ وَأَمْنَا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَنَّ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا
ءَامِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِن الثَّمَرَاتِ ۖ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمْتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ
إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ
الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا
أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَأَبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا
عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۗ إِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

Theme

Accountability on the Day of Judgment. Ibrahim was made the Leader of mankind. Importance of the Ka'ba. Prayer of Ibrahim for the city of Makkah. Ibrahim and Ismail pray for the appointment of a Prophet from the City of Makkah.

यौमे क़यामत के दिन जवाबदेही। इब्राहीम को तमाम इंसानों का रहनुमा बनाया गया। काबा की अहमियत। शहर-ए-मक्का के लिए इब्राहीम की दुआ। इब्राहीम और इस्माईल की मक्का के शहर में एक नबी के मबऊस किए जाने की दुआ।

Tarjumani

O Children of Israel! Remember the special favor which I bestowed upon you, that I exalted you above all other nations. Guard yourselves against the Day when one soul shall not avail another, no ransom shall be taken, no intercession shall profit anyone, and no help shall be given. Remember, when Ibraheem (Abraham) was tested by his Rabb with certain commands, he fulfilled them. Allah said: "Surely, I will make you the leader of mankind." "What about my offspring?" Asked Ibraheem. "My pledge," said Allah, "will not apply to the evil doers." Remember, when We made the House (the

ऐ बनी-इसराईल, याद करो मेरी वह नेमत, जिससे मैंने तुम्हें नवाज़ा था, और यह कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम कौमों पर फ़ज़ीलत दी थी। और डरो उस दिन से जब कोई किसी के ज़रा काम न आएगा, न किसी से फ़िदया क़बूल किया जाएगा, न कोई सिफ़ारिश ही आदमी को फ़ायदा देगा, और न मुजरिमों को कहीं से मदद पहुँच सकेगी। याद करो कि जब इबराहीम को उसके रब ने चन्द बातों में आज़माया और वह उन सब में पूरा उतर गया तो उसने कहा, "मैं तुझे सब लोगों का पेशवा बनानेवाला हूँ।" इबराहीम ने अर्ज़ किया, "और क्या मेरी औलाद से भी यही वादा है?" उसने जवाब दिया, "मेरा वादा ज़ालिमों से मुतअल्लिक नहीं है।" और यह कि हमने इस घर (काबा)

Kabah) a center and sanctuary for mankind saying: "Take the station of Ibraheem as a place of prayer." We entrusted Ibraheem and Ismail to cleanse Our House for those who walk around it, who meditate in it, and who kneel and prostrate in prayers. Remember when Ibraheem said: "My Rabb, make this (Makkah) a secure town and provide its people with plenty of food from fruits, those of them who believe in Allah and the Last Day." He answered, "As for those who do not, I shall also provide for them in this life, though in the Hereafter I shall drag them to the torture of Hellfire and it is an evil destination indeed! Remember, when Ibraheem (Abraham) and Ismail (Ishmael) raised the foundations of the House and prayed: "Accept this from us, O our Rabb, you are the one who hears all and knows all. O our Rabb, make us both Muslims (submissive to You), and make our descendants, a nation that

को लोगों के लिए मर्कज़ और अमन की जगह करार दिया था और लोगों को हुक्म दिया था कि इबराहीम जहाँ इबादत के लिए खड़ा होता है उस मक़ाम को मुस्तक़िल जाए-नमाज़ बना लो, और इबराहीम और इसमाईल को ताकीद की थी कि मेरे इस घर को तवाफ़ और ऐतिकाफ़ और रुकू और सजदा करनेवालों के लिए पाक रखो | और यह कि इबराहीम ने दुआ की, "ऐ मेरे रब, इस शहर को अमन का शहर बना दे, और इसके बाशिन्दों में से जो अल्लाह और आख़िरत को मानें, उन्हें हर क़िस्म के फलों का रिज्क दे |" जवाब में उसके रब ने फ़रमाया, "और जो न मानेगा, दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी का सामान तो मैं उसे भी दूँगा, मगर आख़िरकार उसे अज़ाबे-जहन्नम की तरफ़ घासीटूंगा, और वह बदतरीन ठिकाना है |" और याद करो, इबराहीम और इसमाईल जब इस घर की दीवारें उठा रहे थे तो दुआ करते जाते थे, "ऐ हमारे रब, हमसे यह ख़िदमत कबूल फरमा ले, तू सबकी सुनने और सब कुछ जाननेवाला है | ऐ रब, हम दोनों को अपना मुस्लिम (मुतीये-फ़रमान) बना, हमारी नस्ल से एक ऐसी कौम उठा जो तेरी मुस्लिम

will be Muslims (sub-missive to You). Show us our rites of worship and accept our repentance; surely, you are the Acceptor of repentance, the Merciful. our Rabb, appoint from among them a Rasool who shall recite to them Your Revelations and teach them the Book and the Wisdom, and purify them; surely. You are the All-Mighty, the Wise.

हो, हमें अपनी इबादत के तरीके बता, और हमारी कोताहियों से दरगुजर फरमा, तू बड़ा माफ़ करनेवाला और रहम फरमानेवाला है | और ऐ रब, इन लोगों में खुद इन्हीं की कौम से एक रसूल उठइयो, जो इन्हें तेरी आयात सुनाए, इनको किताब और हिकमत की तालीम दे और इनकी ज़िन्दगियाँ सँवारे, तू बड़ा मुकतदिर और हकीम है |”

Tafsir

Tribe of Israel! Remember the blessing I conferred on you, and that I preferred you over all other beings. [2:122]

ऐ बनी इसराईल! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की थी, और यह कि मैंने तुम्हें तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी थी। [2: 122]

Have fear of a Day when no self will be able to compensate for another in any way, and no ransom will be accepted from it, and no intercession benefit it, and they will not be helped. [2:123]

उस दिन से डरो जब कोई जान किसी जान के काम न आएगी, न उससे कोई फ़िद्या क़बूल किया जाएगा, न कोई सिफ़ारिश उसे फ़ायदा देगी, और न ही उनकी मदद की जाएगी। [2:123]

Remember when Ibrāhīm was tested by his Lord with certain words which he carried out completely. He

याद करो जब इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों के ज़रिये आज़माया और उन्होंने उन सबको पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने

said, 'I will make you a model for mankind.' He asked, 'And what of my descendants?' He said, 'My contract does not include the wrongdoers.' [2:124]

फ़रमाया: "मैं तुम्हें लोगों के लिए पेशवा बनाने वाला हूँ।" इब्राहीम ने अर्ज़ किया: "और मेरी औलाद का क्या होगा?" फ़रमाया: "मेरा अहद ज़ालिमों को शामिल नहीं करता।" [2:124]

Remember when Ibrāhīm was tested by his Lord with certain words which he carried out completely.

याद करो जब इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों के ज़रिये आजमाया और उन्होंने उन्हें पूरी तरह पूरा कर दिखाया।

Since the Ka'bah and qiblah are shortly going to be mentioned, this section is linked to Ibrāhīm who is the one who built the House. Part of the duty of the Jews, who are the descendants of Ibrāhīm, is not to turn away from his dīn. The 'testing' referred to was by commands and acts of worship. Ibrāhīm is a Syriac name, meaning 'merciful father' as al-Māwardī and Ibn 'Aṭīyyah mentioned. As-Suhaylī said, 'Often there is agreement between Syriac and Arabic, or the words are very similar.' Do you not see that Ibrāhīm was merciful to children? That is

चूँकि आगे काबा और क़िब्ला का उल्लेख आने वाला है, इसलिए यह हिस्सा हज़रत इब्राहीम से संबंधित है, क्योंकि वही इस घर (काबा) के बानी हैं। यहूदियों पर, जो हज़रत इब्राहीम की नस्ल से हैं, यह ज़िम्मेदारी है कि वे उनके दीन से रुगर्दानी न करें। यहाँ जिस "आज़माइश" का ज़िक्र है, वह अहकाम और इबादात के ज़रिये थी। इब्राहीम एक सिरियानी नाम है, जिसके अर्थ "मेहरबान बाप" के हैं, जैसा कि इमाम मावर्दी और इब्र अतिय्या ने उल्लेख किया है। सुहैली ने कहा है: "अक्सर सिरियानी और अरबी में आपसी सामंजस्य होता है या अल्फ़ाज़ बहुत मिलते-जुलते होते हैं।" क्या तुम नहीं देखते कि

why he and his wife, Sārah, are entrusted with the care of the children of believers who die young until the Day of Rising? This is indicated by what al-Bukhārī transmitted about the long hadith of the vision reported from Samurah. In it the Prophet ﷺ said that Ibrāhīm was in the meadow surrounded by people's children.

इब्राहीमं बच्चों के साथ कितनी शफ़क़त रखने वाले थे? इसी वजह से क़यामत के दिन तक ईमान वालों के वे बच्चे जो कम उम्र में इंतिक़ाल कर जाते हैं, उनकी निगहदाशत इब्राहीमं और उनकी अहलिया सारां के सुपुर्द की गई है। इसकी ओर उस तवील हदीस-ए-रुया में इशारा मिलता है जिसे बुखारी ने समुराँ से रिवायत किया है, जिसमें नबी ﷺ ने फ़रमाया कि इब्राहीमं एक बाग़ में थे और उनके चारों ओर लोगों के बच्चे थे।

Ibrāhīm was the son of Terath son of Nahor according to some commentators. The Revelation has: *'When Ibrāhīm said to his father, Āzar,'* (6:74) That is also what we find in *Ṣaḥīḥ al-Bukhārī*. There is no contradiction as we discuss later. According to as-Suhaylī, he had four sons: Ismā'īl, Iṣḥāq, Madyan and Madā'in.

कुछ मुफ़स्सिरिन के मुताबिक़ इब्राहीमं तारह के बेटे और नाहूर के पोते थे। कुरआन-ए-मजीद में है: "और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा" (6:74), और यही बात सहीह बुखारी में भी मिलती है। इसमें कोई तआरुज़ नहीं, जैसा कि आगे इस पर चर्चा आएगी। सुहैली के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीमं के चार बेटे थे: इस्माईलं, इस्हाक़ं, मदयन और मदाइन।

The 'words' referred to are, in reality, the words of the Creator but they are considered to be the tasks which He imposed on

यहाँ जिन "कलिमात" का ज़िक्र है, हक़ीक़त में वे ख़ालिक़-ए-हक़ीक़ी के कलिमात हैं, लेकिन उनसे मुराद वे ज़िम्मेदारियाँ और फ़राइज़ हैं जो

~~~~~

Ibrāhīm. Since the means of their imposition was through words, they are called words, just as Jesus is also called a word since He issued from the word ‘Be!’ A thing can be called metaphorically by what it resulted from. Ibn al-‘Arabī said that.

अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीमं पर आयद किए। चूँकि इन फ़राइज़ का हुक्म अल्फ़ाज़ के ज़रिये दिया गया, इसलिए उन्हें “कलिमात” कहा गया। इसी तरह हज़रत ईसां को भी “कलिमा” कहा जाता है, क्योंकि वे अल्लाह के फ़रमान “हो जा” से वजूद में आए। किसी चीज़ को मजाज़न उसके नतीजे या सबब के एतिबार से भी नाम दिया जा सकता है। यह बात इब्नुल-अरबी ने बयान की है।

Scholars disagree about what is meant by these ‘words’ (*kalimāt*). One position is that they are the laws of Islam and that they entail thirty qualities:

इन “कलिमात” (*कलिमात*) से क्या मुराद है, इस बारे में उलमा के दरमियान इख़िलाफ़ पाया जाता है। एक राय यह है कि उनसे मुराद इस्लाम के अहकाम व क़वानीन हैं, और यह कि वे तीस सिफ़ात पर मुश्तमिल हैं:

Ten are in Sūrat at-Tawbah: ‘*Those who make sincere repentance, those who worship, those who praise, those who fast, those who bow, those who prostrate, those who command what is known to be right, those who forbid what is recognised as wrong, those who preserve the limits of Allah: give good news to the believers.*’ (9:112)

इनमें से दस सूरह तौबह में बयान की गई हैं: “वे जो सच्ची तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, अल्लाह की हम्द करने वाले हैं, रोज़ा रखने वाले हैं, रुकू‘ करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, नेकी का हुक्म देने वाले हैं, बुराई से रोकने वाले हैं, और अल्लाह की हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं—ऐसे ईमान वालों को खुशख़बरी दे दो।” (9:112)

~~~~~

Ten are in Sūrat al-Aḥzāb: *‘Men and women who are Muslims, men and women who are believers, men and women who are obedient, men and women who are truthful, men and women who are steadfast, men and women who are humble, men and women who give ṣadaqa, men and women who fast, men and women who guard their private parts, men and women who remember Allah much: Allah has prepared forgiveness for them and an immense reward.’* (33:35)

इनमें से दस सूरह अहज़ाब में बयान की गई हैं: “मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, फ़रमाबरदार मर्द और फ़रमाबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, साबिर मर्द और साबिर औरतें, आज़िज़ी इख़्तियार करने वाले मर्द और आज़िज़ी इख़्तियार करने वाली औरतें, सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को कसरत से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें—अल्लाह ने उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज़्र तैयार कर रखा है।” (33:35)

And ten are in Sūrat al-Mu’minūn: *‘It is the believers who are successful: those who are humble in their prayer; those who turn away from worthless talk; those who pay zakāt; those who guard their private parts except from their wives, or those they own as slaves, in which case they are not blameworthy – but those*

इनमें से दस सूरह अल-मु’मिनून में बयान की गई हैं: “यक़ीनन अहल-ए-ईमान ही फ़लाह पाने वाले हैं: वे जो अपनी नमाज़ में ख़ुशू’ इख़्तियार करते हैं; वे जो लयव बातों से मुँह मोड़ लेते हैं; वे जो ज़कात अदा करते हैं; वे जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं—सिवाय अपनी बीवियों या उन (लौंडी-गुलामों) के जिनके वे मालिक हों—इस सूरत में वे क़ाबिल-

who desire anything more than that are people who have gone beyond the limits – those who honour their trusts and their contracts; those who safeguard their prayer.’ (23:1–9)

ए-मलामत नहीं—और जो इसके सिवा कुछ चाहें तो वही हद से बढ़ने वाले हैं; वे जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की पासदारी करते हैं; और वे जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।” (23:1–9)

Ibn ‘Abbās said, ‘Allah did not test any person who fulfilled every one of these qualities except for Ibrāhīm. He was tested by Islam and fulfilled it completely. Allah exonerated him and said: “*Ibrāhīm who paid his dues in full.*” (53:37)’ Some said that it means the command and prohibition. Another said that the test was sacrificing his son. Yet another said it means carrying out the Message. The ideas are close to one another. Mujāhid said, ‘It refers to the words of the Almighty to Ibrāhīm. Ibrāhīm said, “Will You make me a model for mankind?” “Yes,” He said. He asked, “And what of my descendants?” He said, “My contract does not include the wrongdoers.” Ibrāhīm asked, “Will You make the

हज़रत इब्र-ए-अब्बास ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने इन तमाम सिफ़ात को पूरी तरह अदा करने वाला कोई शख्स हज़रत इब्राहीम के सिवा नहीं आजमाया। उन्हें इस्लाम के ज़रिये आजमाया गया और उन्होंने उसे पूरी तरह पूरा किया। अल्लाह तआला ने उन्हें बरीउज़्ज़िम्मा करार दिया और फ़रमाया: ‘और इब्राहीम, जिसने पूरा-पूरा हक़ अदा किया’ (53:37)।” बाज़ अहल-ए-इल्म ने कहा कि इससे मुराद अम्र व नहीं (अहकाम और ममनूआत) हैं। एक क़ौल यह है कि आजमाइश बेटे की कुर्बानी थी। एक और क़ौल यह है कि इससे मुराद रिसालत के पैग़ाम को पूरी तरह पहुँचा देना है। ये तमाम आराएँ एक-दूसरे के करीब हैं। मुजाहिद ने कहा: “इससे मुराद अल्लाह तआला के वे कलिमात हैं जो हज़रत इब्राहीम से कहे गए। हज़रत इब्राहीम ने अर्ज़ किया: ‘क्या आप

House a place of return for people?” “Yes,” He answered. He asked, “And a sanctuary?” “Yes,” He said. He said, “Will You show us our rites of worship and turn towards us?” “Yes,” He answered. He asked, “Will You provide its inhabitants with fruits?” “Yes,” He said. So according to this position, Allah Almighty is the one who carried out His own words.’

मुझे लोगों का पेशवा बनाएँगे?’ फ़रमाया: ‘हाँ।’ उन्होंने अर्ज़ किया: ‘और मेरी औलाद का क्या होगा?’ फ़रमाया: ‘मेरा अहद ज़ालिमों को शामिल नहीं करता।’ हज़रत इब्राहीम॑ ने अर्ज़ किया: ‘क्या आप इस घर को लोगों के लिए मरजअ बनाएँगे?’ फ़रमाया: ‘हाँ।’ उन्होंने अर्ज़ किया: ‘और अमन की जगह?’ फ़रमाया: ‘हाँ।’ उन्होंने अर्ज़ किया: ‘क्या आप हमें हमारी इबादत के तरीके दिखाएँगे और हमारी तरफ़ मुतवज्जेह होंगे?’ फ़रमाया: ‘हाँ।’ उन्होंने अर्ज़ किया: ‘क्या आप इसके रहने वालों को फलों का रिज़क अता करेंगे?’ फ़रमाया: ‘हाँ।’ पस इस क़ौल के मुताबिक़ अल्लाह तआला ही वह ज़ात है जिसने अपने ही कलिमात को पूरा किया।”

Sounder than this is what Ṭāwus reported that Ibn ‘Abbās said about this matter: ‘Allah tested him by acts of purification: five connected with the head and five with the body. They are, in respect of the head trimming the moustache, rinsing the mouth, snuffing water up the nose,

इस मामले में इससे ज़्यादा मज़बूत बात वह है जो ताऊस॑ ने हज़रत इब्र-ए-अब्बास॑ से रिवायत की है। उन्होंने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम॑ को तहारत के आमाल के ज़रिये आज़माया: पाँच सिर से संबंधित और पाँच बदन से संबंधित। सिर के आमाल ये हैं: मूँछें तराशना, कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, मिस्वाक इस्तेमाल करना,

~~~~~

using the siwāk, and parting the hair; and in respect of the body they are clipping the nails, shaving the pubes, circumcision, plucking the underarms, and washing the site of faeces and urine with water.’ According to this position, the one who carried out the words was Ibrāhīm. It is the literal meaning of the Qur’an.

और बालों में माँग निकालना; और बदन के आमाल ये हैं: नाखून काटना, ज़ेर-ए-नाफ़ बाल मुँडाना, खतना करना, बग़ल के बाल उखाड़ना, और पेशाब व पाख़ाना की जगह को पानी से धोना।” इस क़ौल के मुताबिक़ जिन “कलिमात” को पूरा किया गया, वे हज़रत इब्राहीमं ही थे। यही कुरआन के ज़ाहिर (लफ़्ज़ी) मआनी के मुताबिक़ है।

Maṭar related from Abu-l-Jald that there are ten although there is a difference: instead of parting the hair, there is washing the knuckles, and instead of washing the site of faeces and urine there is shaving the pubes with a razor. Qatādah said that they are the practices of the Ḥajj. Al-Ḥasan said that they are six things: rejecting first the planets, then the moon, then the sun, being thrown into the fire, emigration and circumcision. Az-Zajjāj said that these reports are not contradictory because all of them are part of what Ibrāhīm was tested with.

मुतर ने अबू-ल-जल्द से रिवायत की है कि वे भी दस ही हैं, लेकिन इसमें कुछ फ़र्क़ है: बालों में माँग निकालने के बजाय उँगलियों के जोड़ धोना है, और पेशाब व पाख़ाना की जगह पानी से धोने के बजाय उस्तरे से ज़ेर-ए-नाफ़ बाल मुँडाना है। क़तादाँ ने कहा कि इससे मुराद हज्ज के आमाल हैं। हसन बसरीँ ने कहा कि वे छह चीज़ें हैं: पहले सितारों का इनकार, फिर चाँद का, फिर सूरज का, आग में डाला जाना, हिजरत करना, और ख़तना। अज़-ज़ज्जाज ने कहा कि ये रिवायतें आपस में मुतआरिज़ नहीं हैं, क्योंकि ये सब उन उमूर में शामिल हैं जिनके ज़रिये हज़रत इब्राहीमं को आज़माया गया

~~~~~

	था।
<p>We see in the <i>Muwatta</i>’ and elsewhere that Sa’id ibn al-Musayyib was heard to say, ‘Ibrāhīm was the first to be circumcised, the first to give hospitality, the first to make a mosque, the first to clip his nails, the first to trim the moustache, and the first to have white hair. When he saw the white hair, he asked, “What is this?” Allah answered, “Gravity.” He said, “Lord, increase me in gravity!”’ Abū Bakr ibn Abī Shaybah mentioned from Sa’id ibn Ibrāhīm that his father said, ‘The first to give a khutbah on a minbar was Ibrāhīm, the Friend of Allah.’ Someone else said that he was the first to make a meat stew, the first to strike with a sword, the first to use siwāk, the first to use water in the lavatory and the first to wear trousers. Mu’adh ibn Jabal reported that the Prophet ﷺ said, ‘If I adopt a minbar, my father Ibrāhīm adopted it. If I take a staff, my father Ibrāhīm</p>	<p>मुवत्ता’ और अन्य कुतुब में हमें यह मिलता है कि सईद बिन अल-मुसयिब को यह कहते हुए सुना गया: “हज़रत इब्राहीम सबसे पहले खतना करने वाले थे, सबसे पहले मेहमान-नवाज़ी करने वाले थे, सबसे पहले मस्जिद बनाने वाले थे, सबसे पहले नाखून काटने वाले थे, सबसे पहले मूँछें तराशने वाले थे, और सबसे पहले जिनके बाल सफ़ेद हुए। जब उन्होंने सफ़ेदी देखी तो पूछा: ‘यह क्या है?’ अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ‘वक्रार।’ उन्होंने अर्ज़ किया: ‘ऐ रब! मेरा वक्रार और बढ़ा दे!’” अबू बक्र बिन अबी शैबह ने सईद बिन इब्राहीम से रिवायत की है कि उनके वालिद ने कहा: “अल्लाह के खलील हज़रत इब्राहीम ही सबसे पहले मिम्बर पर खुत्बा देने वाले थे।” किसी और ने कहा कि वे सबसे पहले गोश्त का शोरबा पकाने वाले थे, सबसे पहले तलवार से ज़र्ब लगाने वाले थे, सबसे पहले मिस्वाक इस्तेमाल करने वाले थे, सबसे पहले क़ज़ा-ए-हाजत के लिए पानी इस्तेमाल करने वाले थे, और सबसे पहले पायजामा पहनने वाले थे। मुआज़ बिन जबल ने रिवायत किया</p>

~~~~~

used it.' All these things will be dealt with in their proper place.

है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अगर मैं मिम्बर इख़्तियार करूँ, तो मेरे बाप इब्राहीमं ने भी मिम्बर इख़्तियार किया था; और अगर मैं लाठी लूँ तो मेरे बाप इब्राहीमं लाठी इस्तेमाल करते थे।" इन तमाम उमूर पर उनके मुनासिब मक़ाम पर तफ़सील से गुफ़्तगू की जाएगी।

Scholars agree that Ibrāhīm was the first to be circumcised. There is disagreement about the age at which the circumcision took place. In the *Muwatta'* Abū Hurayrah is reported in a *mawqūf* report as stating that he was 120 and lived for eighty years after that. Something like this would not be stated based on mere opinion. Al-Awzā'ī related it *marfū'* from Yaḥyā ibn Sa'īd from Sa'īd ibn al-Musayyib. Abū 'Umar mentioned it. Others relate that it was done at the age of eighty and was carried out with an adze.

उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रत इब्राहीमं सबसे पहले ख़तना करने वाले थे। हालांकि उस उम्र के बारे में इख़्तिलाफ़ है जिसमें ख़तना हुआ। मुवत्ता' में हज़रत अबू हुरैरा' से एक मौकूफ़ रिवायत नक़ल की गई है कि उस वक़्त हज़रत इब्राहीमं की उम्र एक सौ बीस वर्ष थी और इसके बाद वे अस्सी वर्ष तक ज़िंदा रहे। ऐसी बात महज़ राय की बुनियाद पर नहीं कही जा सकती। इमाम औज़ाई' ने इसे यहा बिन सईद के वासिते से सईद बिन अल-मुसय़िब' से मरफू' रिवायत किया है, और अबू उमर ने भी इसका ज़िक्र किया है। कुछ दूसरी रिवायतों में आया है कि ख़तना अस्सी वर्ष की उम्र में हुआ और वह कुल्हाड़ी (या तेशे) के ज़रिये किया गया।

Scholars disagree about the legal status of circumcision.

ख़तना की शरई हैसियत के बारे में उलमा के दरमियान इख़्तिलाफ़ है।

~~~~~

The majority say that it is a confirmed *sunnah* and part of the natural patterning of Islam which men should not abandon. A group say that it is obligatory since Allah says: *'Follow the religion of Ibrāhīm, a man of pure natural faith.'* (2:123) Qatādah said that that refers to circumcision and some Mālikīs believe that. That is the view of ash-Shāfi'ī. Some of our people argue on the basis of what al-Hajjāj ibn Arṭa'ah related from Abu-l-Malīḥ from his father from Shaddād ibn Awas that the Messenger of Allah ﷺ said, 'Circumcision is sunnah for men, and honour for women.' Al-Hajjāj is not someone who is used as authority.

जमहूर का कहना है कि यह सुन्नत-ए-मुअक्कदा है और इस्लाम की फ़ितरी सुन्नतों में से है, जिसे मर्दों के लिए छोड़ना दुरुस्त नहीं। एक गिरोह का कहना है कि यह फ़र्ज़ है, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: "इब्राहीम के दीन की पैरवी करो, जो ख़ालिस फ़ितरत पर क़ायम थे" (2:123)। क़तादा ने कहा है कि इससे मुराद ख़तना है, और कुछ मालिकी उलमा भी इसी के क़ायल हैं। यही इमाम शाफ़िई का मौक़िफ़ है। हमारे कुछ अहल-ए-इल्म ने उस रिवायत से इस्तिदलाल किया है जिसे हज्जाज बिन अरताह ने अबू-ल-मलीह से, उन्होंने अपने वालिद से, और उन्होंने शद्दाद बिन औस से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ख़तना मर्दों के लिए सुन्नत है और औरतों के लिए इज़्ज़त का बाइस है।" लेकिन हज्जाज बिन अरताह ऐसे रावी नहीं हैं जिन पर हुज्जत क़ायम की जाए।

Part of what is considered authoritative about this matter is the hadith of Abū Hurayrah that the Prophet ﷺ said, 'The natural form (*fitrah*) consists of five: circumcision...' Abū

इस मसले के बारे में जो बातें मुतबर समझी जाती हैं, उनमें हज़रत अबू हुरैरा की वह हदीस भी शामिल है जिसमें नबी ﷺ ने फ़रमाया: "फ़ितरत पाँच चीज़ों पर मुश्तमिल है: ख़तना ..."। इमाम अबू दाऊद ने उम्म-ए-

Dāwūd related from Umm ‘Aṭiyyah that a woman used to circumcise women in Madīnah. The Prophet ﷺ told her, ‘Do not cut a lot. That is better for the woman and more liked by her husband.’ Abū Dāwūd said that this hadith is weak. It contains someone unknown. A boy born with no foreskin is spared circumcision. Al-Maymūnī said, ‘I said to Aḥmad, “This is a man who was born circumcised. He is very grieved about it.”’ He said, “Allah has spared him the burden. What is he unhappy about?”

अतिय्याँ से रिवायत किया है कि मदीना में एक औरत औरतों का खतना किया करती थी। नबी ﷺ ने उससे फ़रमाया: “ज़्यादा न काटो, यह औरत के लिए बेहतर है और उसके शौहर को ज़्यादा पसंद आता है।” इमाम अबू दाऊद ने कहा है कि यह हदीस ज़ईफ़ है, क्योंकि इसकी सनद में एक मजहूल रावी है। जो लड़का बिना पोस्त-ए-खतना के पैदा हो, उससे खतना साक़ित हो जाता है। मयमूनी कहते हैं: “मैंने इमाम अहमद से कहा: ‘यह एक शख्स है जो पैदाइशी तौर पर मुख्तून है और वह इस बात पर बहुत रंज़ीदा है।’ उन्होंने फ़रमाया: ‘अल्लाह तआला ने उसे इस मशक्क़त से बचा लिया, वह किस बात पर नाख़ुश है?’”

Abu-l-Faraj al-Jawzī said that Ka‘b al-Aḥbār said, ‘Thirteen Prophets were created circumcised: Ādam, Shīth, Idrīs, Nūḥ, Sām, Lūt, Yūsuf, Mūsā, Shu‘ayb, Sulaymān, Yaḥyā, ‘Īsā and the Prophet ﷺ.’ Muḥammad ibn Ḥabīb al-Hāshimī said that there were fourteen: Ādam, Shīth, Nūḥ, Hūd, Ṣāliḥ, Lūt, Shu‘ayb,

अबू अल-फ़रज इब्नुल-जौज़ीँ ने बयान किया है कि काब अल-अहबारँ ने कहा: “तेरह अंबिया पैदाइशी तौर पर मुख्तून पैदा किए गए: आदमं, शीसं, इदरीसं, नूहं, सामं, लूतं, यूसुफ़ं, मूसां, शुऐबं, सुलैमानं, यह्यां, ईसां और नबी ﷺ।” मुहम्मद बिन हबीब अल-हाशिमि ने कहा है कि वे चौदह थे: आदमं, शीसं, नूहं, हूदं, सालिहं, लूतं, शुऐबं, यूसुफ़ं,

Yūsuf, Mūsā, Sulaymān, Zakariyyā, ʿĪsā, Ḥanzalah ibn Ṣafwān (the Prophet of the people of ar-Rass) and the Prophet ﷺ.

मूसां, सुलैमानं, ज़करियां, ईसां, हनज़ला बिन सफ़वानं (क्रौम-ए-रस के नबी), और नबी ﷺ।

There are differing reports about the Prophet ﷺ. Ḥāfiẓ Abū Nuʿaym said in *Kitāb al-hilyah* with an *isnād* that the Prophet ﷺ was born uncircumcised. In *at-Tamhīd* Abū ʿUmar has an *isnād* from Aḥmad ibn Muḥammad ibn Aḥmad from Muḥammad ibn ʿĪsā from Yaḥyā ibn Ayyūb al-ʿAllāf from Muḥammad ibn Abī as-Sariyy al-ʿAsqallānī from al-Walīd ibn Muslim from Shuʿayb from ʿAṭāʾ al-Khurāsānī from ʿIkrimah from Ibn ʿAbbās that ʿAbd al-Muṭṭalib circumcised the Prophet ﷺ on the seventh day, prepared a feast for him and named him ʿMuḥammadʿ. Abū ʿUmar said that it is a hadith with a strange *isnād*. Yaḥyā ibn Ayyūb said, ʿI looked for this hadith and did not find it with any of the people of hadith I met except for Ibn Abī as-

नबी ﷺ के बारे में इस सिलसिले में मुख्तलिफ़ रिवायतें मनकूल हैं। हाफ़िज़ अबू नुऐम ने *किताब अल-हिल्यह* में एक सनद के साथ ज़िक्र किया है कि नबी ﷺ ग़ैर-मुख्तून पैदा हुए। *अत-तम्हीद* में अबू उमर ने एक सनद नक़ल की है: अहमद बिन मुहम्मद बिन अहमद से, वह मुहम्मद बिन ईसा से, वह यहा बिन अय्यूब अल-ʿअल्लाफ़ से, वह मुहम्मद बिन अबी अस-सरी अल-ʿअसक़लानी से, वह वलीद बिन मुस्लिम से, वह शुऐब से, वह अता अल-खुरासानी से, वह इक्रिमा से, वह इब्र अब्बास से रिवायत करते हैं कि ʿअब्दुल-मुत्तलिब ने नबी ﷺ का सातवें दिन ख़तना किया, उनके लिए दावत का एहतिमाम किया और उनका नाम ʿमुहम्मदʿ रखा। अबू उमर ने कहा है कि यह एक ऐसी हदीस है जिसकी सनद ग़रीब है। यहा बिन अय्यूब ने कहा: ʿमैंने इस हदीस को तलाश किया, लेकिन जिन अहल-ए-हदीस से मेरी मुलाक़ात हुई, उनमें से किसी के

Sariyy.' Abū 'Umar remarked that it is said that the Prophet ﷺ was born uncircumcised.

There is disagreement about when a boy should be circumcised. It is confirmed in reports from a group of scholars that Ibrāhīm circumcised Ismā'īl at the age of thirteen and circumcised his son Isāac at the age of seven days. It is related from Fāṭimah that she circumcised her son on the seventh day. Mālik objected to that and said that it is part of Jewish practice. Ibn Wahb mentioned it from him. Al-Layth ibn Sa'd said, 'A child is circumcised between the age of seven and ten.' Ibn Wahb related the like from Mālik. Aḥmad said, 'I have not heard anything about this.' We find in al-Bukhārī that Sa'īd ibn Jubayr said, 'Ibn 'Abbās was asked, "What were you like when the Messenger of Allah ﷺ died?" He said, "I was still uncircumcised that day.'" He said, 'They used not to

पास यह रिवायत नहीं पाई, सिवाय इब्र अबी अस-सरी के।" अबू उमर ने मज़ीद कहा कि यह भी कहा जाता है कि नबी ﷺ ग़ैर-मुख्तून पैदा हुए थे।

लड़के के खतने के समय के बारे में उलमा के दरमियान इख़्तिलाफ़ है। अहल-ए-इल्म के एक गिरोह से मनकूल रिवायतों में यह बात साबित है कि हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माइल का खतना तेरह बरस की उम्र में किया और अपने बेटे इस्हाक का खतना सातवें दिन किया। हज़रत फ़ातिमा से रिवायत है कि उन्होंने अपने बेटे का खतना सातवें दिन किया। इमाम मालिक ने इस पर एतराज़ किया और फ़रमाया कि यह यहूदियों के तरीके में से है। इब्र वहब ने यह बात उनसे नक़ल की है। लैस बिन सअद ने कहा: "बच्चे का खतना सात से दस बरस की उम्र के दरमियान किया जाता है।" इब्र वहब ने इमाम मालिक से भी इसी तरह की बात रिवायत की है। इमाम अहमद ने फ़रमाया: "मैंने इस बारे में कोई बात नहीं सुनी।" सहीह बुखारी में हमें यह मिलता है कि सईद बिन जुबैर ने कहा: "हज़रत इब्र अब्बास से पूछा गया: "जब रसूलुल्लाह ﷺ का इंतिक़ाल हुआ तो

~~~~~

|                                                                            |                                                                                                                                                                                                     |
|----------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>circumcise a male until he had reached puberty, or shortly before.'</p> | <p>उस वक़्त तुम किस हाल में थे?' उन्होंने कहा: 'उस दिन मैं अभी ग़ैर-मुख़्तून था।'" फिर उन्होंने कहा: "लोग उस वक़्त तक लड़के का ख़तना नहीं करते थे जब तक वह बालिग़ न हो जाता, या उससे कुछ पहले।"</p> |
|----------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>Scholars recommend that an adult male should be circumcised. 'Aṭā' used to say that a man's Islam is not complete until he is circumcised, even if he is eighty. It is related that al-Ḥasan allowed an old man who becomes Muslim to not be circumcised and he saw no harm in him, his testimony, slaughtering, ḥajj and prayer. Ibn 'Abd al-Barr said, 'This is what most of the people of knowledge believe. The hadith of Buraydah about the ḥajj of an uncircumcised man is not confirmed.' It is related from Ibn 'Abbās, Jābir ibn Zayd and 'Ikrimah that the animals slaughtered by someone uncircumcised are not eaten and his testimony is not</p> | <p>उलमा इस बात की सिफ़ारिश करते हैं कि बालिग़ मर्द का ख़तना किया जाए। अता० कहा करते थे कि किसी मर्द का इस्लाम उस वक़्त तक कामिल नहीं होता जब तक उसका ख़तना न हो जाए, चाहे उसकी उम्र अस्सी बरस ही क्यों न हो। यह भी रिवायत है कि हसन बसरी० ने उस बूढ़े शख़्स को, जो इस्लाम कुबूल करे, ख़तना न कराने की इजाज़त दी, और उन्होंने इसमें कोई हरज नहीं समझा—न उसके हाल में, न उसकी गवाही में, न उसके ज़बह में, न उसके हज्ज में और न उसकी नमाज़ में। इब्र अब्दुल-बर० ने कहा: "अक्सर अहल-ए-इल्म का यही क़ौल है। ग़ैर-मुख़्तून शख़्स के हज्ज के बारे में बुरैदा० की हदीस साबित नहीं है।" हज़रत इब्र अब्बास०, जाबिर बिन ज़ैद० और इक्रिमा० से यह भी मनकूल है कि ग़ैर-मुख़्तून शख़्स के ज़बह किए हुए जानवर नहीं खाए</p> |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

~~~~~

|           |                                        |
|-----------|----------------------------------------|
| accepted. | जाते और उसकी गवाही कुबूल नहीं की जाती। |
|-----------|----------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| With regard to clipping the nails, Mālik said, ‘It is recommended for women to clip their nails and shave their pubes just as it is for men.’ Al-Hārith ibn Miskīn and Saḥnūn mentioned it from Ibn al-Qāsim. At-Tirmidhī mentioned in <i>Nawādir al-uṣūl</i> from ‘Umar ibn Ibn ‘Umar from Ibrāhīm ibn al-‘Alā’ az-Zubaydī that ‘Umar ibn Bilāl al-Fazārī heard ‘Abdullāh ibn Bishr al-Māzinī that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘Cut your nails and bury the clippings. Clean your knuckles. Cleans your gums of food and brush your teeth. Do not visit me stinking.’ | नाखून काटने के बारे में इमाम मालिक० ने फ़रमाया: “औरतों के लिए भी नाखून काटना और ज़ेर-ए-नाफ़ बाल मुँडाना उसी तरह मुस्तहब है जिस तरह मर्दों के लिए है।” हारिस बिन मिस्कीन० और सहनून० ने यह बात इब्न अल-क़ासिम० से नक़ल की है। इमाम तिरमिज़ी० ने <i>नवादिर अल-उसूल</i> में उमर बिन इब्न-ए-उमर से, वह इब्राहीम बिन अल-अलाअ जुबैदी से रिवायत किया है कि उमर बिन बिलाल अल-फ़ज़ारी ने अब्दुल्लाह बिन बिश्र अल-माज़िनी से सुना कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अपने नाखून काटो और उनके कतरन ज़मीन में दफ़न कर दो। अपनी उँगलियों के जोड़ साफ़ करो। मसूड़ों को खाने के ज़र्रात से साफ़ रखो और दाँतों पर मिस्वाक करो। बदबू की हालत में मेरे पास न आया करो।” |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                             |                                                                                                                                                                                                |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| Trimming the moustache involves cutting it back a little so that the edge of the lip appears but not removing it completely, which constitutes self-mutilation according to | मूँछें तराशने से मुराद यह है कि उन्हें इतना कम किया जाए कि होंठ का किनारा ज़ाहिर हो जाए, न यह कि बिल्कुल मुँड दी जाएँ, क्योंकि इमाम मालिक० के नज़दीक ऐसा करना <b>मुसला</b> (अपने आप को नुक़सान |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

Mālik. Ibn ‘Abd al-Ḥakam reported that he said, ‘I think that someone who shaves off his moustache should be disciplined.’ Ashhab said that Mālik said about shaving it, ‘It is an innovation and I think that the one who does it should be beaten.’ Ibn Khuwayzimandād said that Mālik said, ‘I think that someone who shaves should be painfully beaten.’ This seems to be because he viewed it as self-mutilation. The same is true about plucking it out. It is better to trim it than shave.

पहुँचाना) के जुमरे में आता है। इब्न अब्दुल-हकम ने रिवायत किया है कि इमाम मालिक० ने फ़रमाया: “मेरा खयाल है कि जो शरख्स अपनी मूँछें बिल्कुल मुँड दे, उसे ताज़ीरी सज़ा दी जानी चाहिए।” अशहब ने नक़ल किया है कि इमाम मालिक० ने मूँछें मुँडने के बारे में कहा: “यह बिदअत है और मेरा खयाल है कि जो ऐसा करे, उसे मारा जाना चाहिए।” इब्न खुवैज़िमन्दाद ने भी बयान किया है कि इमाम मालिक० ने फ़रमाया: “मेरा खयाल है कि जो मूँछें मुँड दे, उसे दर्दनाक सज़ा दी जानी चाहिए।” ग़ालिबन इसकी वजह यह है कि वे इसे मुसला समझते थे। यही हुक्म मूँछें नोचने के बारे में भी है। मूँछें मुँडने के बजाय उन्हें तराशना बेहतर है।

It is related that the Prophet ﷺ used to trim his nails and moustache before he went to Jumu‘ah. At-Ṭahāwī said, ‘We did not find any text from ash-Shāfi‘ī on that. His companions whom we saw, namely al-Muzanī and ar-Rabī‘, used to trim their moustaches. That indicates that they took that

रिवायत है कि नबी ﷺ जुमा के लिए जाने से पहले अपने नाखून और मूँछें तराशा करते थे। इमाम तहाँवी० ने कहा: “हमें इमाम शाफ़िई० से इस बारे में कोई सरीह नुसूस नहीं मिली। हालांकि उनके असहाब, जिन्हें हमने देखा—यानी मुज़नी० और रबी०—वे अपनी मूँछें तराशा करते थे। इससे ज़ाहिर होता है कि उन्होंने यह तरीका इमाम शाफ़िई० ही से लिया था।”

from ash-Shāfi'ī.' He said that the school of Abū Hanīfah, Zafar, Abū Yūsuf and Muḥammad was that it was better to trim the hair and moustache close than to shorten it. Ibn Khuwayzimandād mentioned that the school of ash-Shāfi'ī was to shave the moustache as was the school of Abū Hanīfah. Abū Bakr al-Athram said, 'I saw that Aḥmad ibn Ḥanbal trimmed his moustache a lot. I heard him being asked about the sunnah of trimming the moustache and he said, "It is trimmed as the Prophet ﷺ said, "Trim the moustache."

उन्होंने आगे कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा, ज़फ़र, अबू यूसुफ़ और मुहम्मद के मस्लक के मुताबिक़ बाल और मूँछें करीब से तराशना, महज़ हल्का कम करने से बेहतर है। इब्र ख़ुवैज़िमन्दाद ने ज़िक्र किया है कि इमाम शाफ़िई का मस्लक मूँछें मुँडाना था, जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा का भी था। अबू बक्र अल-अथरम ने कहा: "मैंने देखा कि इमाम अहमद बिन हनबल अपनी मूँछें बहुत ज़्यादा तराशते थे। मैंने उन्हें मूँछें तराशने की सुन्नत के बारे में पूछते हुए सुना तो उन्होंने फ़रमाया: 'मूँछें उसी तरह तराशी जाएँ जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया है: "मूँछें तराशो।"'"

Abū Bakr said that there are two basic principles here: one is trimming, which is a word subject to interpretation, and the other is shortening it, which is explanatory. That which is explained trumps that which is subject to interpretation. That was the practice of the people of Madīnah, and it is the most appropriate thing that is said about this topic. At-Tirmidhī

अबू बक्र ने कहा है कि यहाँ दो बुनियादी उसूल हैं: एक तराशना है, जो ऐसा लफ़ज़ है जिसमें कई एहतेमालात होते हैं; और दूसरा कम करना है, जो वाज़ेह और मुफ़स्सिर है। जो चीज़ वाज़ेह हो, वह उस पर मुक़द्दम होती है जो मुहतमिल हो। यही अहल-ए-मदीना का अमल था, और इसी मौजू पर यही बात सबसे ज़्यादा मुनासिब समझी जाती है। इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है

related that Ibn ‘Abbās said, “The Messenger of Allah ﷺ used to shorten his moustache and said, ‘Ibrāhīm, the Beloved of the All-Merciful, used to do this.’” He said that it is a ḥasan gharīb hadith. Muslim transmitted from Abū Hurayrah that the Prophet ﷺ said, “The natural form consists of five: circumcision, shaving the pubes, shortening the moustache, clipping the nails and plucking the armpits.” Regarding that, Ibn ‘Umar said that the Messenger of Allah ﷺ said, “Be different to the idolaters. Trim the moustache and let the beard be full.” The Persians used to shorten their beards and let their moustaches grow, or let them both grow. This is contrary to beauty and cleanliness. Razīn mentioned from Nāfi‘ that Ibn ‘Umar used to trim his moustache until the skin showed, and he cut what was between the moustache and the beard. We find in al-Bukhārī: “Ibn ‘Umar used to cut off of his beard what was

कि हज़रत इब्र अब्बासुँ ने कहा: “रसूलुल्लाह ﷺ अपनी मूँछें कम किया करते थे और फ़रमाते थे: ‘इब्राहीम, रहमान के खलील, भी ऐसा ही करते थे।’” इमाम तिर्मिज़ीँ ने कहा कि यह हदीस हसन ग़रीब है। इमाम मुस्लिमँ ने हज़रत अबू हुरैराँ से रिवायत किया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “फ़ितरत पाँच चीज़ों पर मुश्तमिल है: ख़तना, ज़ेर-ए-नाफ़ बाल मुँडाना, मूँछें कम करना, नाखून काटना, और बग़ल के बाल उखाड़ना।” इसी ज़िम्न में हज़रत इब्र उमरँ ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मुश्रिकों की मुखालफ़त करो; मूँछें कम करो और दाढ़ी को बढ़ाओ।” फ़ारसी लोग या तो दाढ़ियाँ कम करते थे और मूँछें बढ़ाते थे, या दोनों को बढ़ा लेते थे। यह तरीक़ा हुस्र और सफ़ाई के ख़िलाफ़ है। रज़ीनँ ने नाफ़िँ से नक़ल किया है कि हज़रत इब्र उमरँ अपनी मूँछें इस क़दर कम करते थे कि खाल ज़ाहिर हो जाती थी, और मूँछ और दाढ़ी के दरमियान के बाल भी काट देते थे। सहीह बुख़ारी में आता है: “हज़रत इब्र उमरँ हज्ज या उमरा के वक़्त अपनी दाढ़ी में से एक मुट्ठी से ज़्यादा बाल काट देते थे।”

~~~~~

more than a handful when he went on ḥajj or ‘umrah.” At-Tirmidhī related from ‘Abdullāh ibn ‘Amr ibn al-‘Ās that the Messenger of Allah ﷺ used to cut some of his beard on the sides and end. He said that it is a gharīb hadith.

इमाम तिरमिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ अपनी दाढ़ी के किनारों और निचले हिस्से से कुछ बाल काटा करते थे। इमाम तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस ग़रीब है।

The sunnah for armpits is to pluck them, just as the sunnah for the pubes is to shave them. If the reverse is done, that is permitted because cleanliness is achieved, but the first is more appropriate since it is the custom.

बग़ल के बालों के बारे में सुन्नत यह है कि उन्हें उखाड़ा जाए, जैसे ज़ेर-ए-नाफ़ बालों के बारे में सुन्नत यह है कि उन्हें मूँडा जाए। अगर इसके बरअक्स भी किया जाए तो इसकी इजाज़त है, क्योंकि इससे भी सफ़ाई हासिल हो जाती है, लेकिन पहला तरीक़ा ज़्यादा मुनासिब है, क्योंकि वही मअरूफ़ और मामूल का तरीक़ा है।

The hair is parted. The Prophet ﷺ used to part his locks. One describes “parting” the hair when it is not left to grow however it will. An-Nasā’ī related from Ibn ‘Abbās that the Prophet ﷺ used to leave his hair to hang down, and the idolaters used to part their hair. He liked to be in conformity with the People of the Book when he had not been commanded anything specific.

बालों में माँग निकालना सुन्नत है। नबी ﷺ अपने बालों में माँग निकाला करते थे। “माँग निकालना” उसी समय कहा जाता है जब बालों को यूँ ही बिखरा छोड़ न दिया जाए जैसे वे अपने आप बढ़ें। इमाम नसाई ने हज़रत इब्र अब्बास से रिवायत किया है कि नबी ﷺ अपने बालों को खुला छोड़ते थे, जबकि मुशरिक अपने बालों में माँग निकालते थे। जब तक किसी ख़ास हुक्म का नुज़ूल नहीं हुआ था, नबी ﷺ अहल-ए-किताब के

~~~~~

Then after that he ﷺ parted his hair. Al-Bukhārī and Muslim transmitted it from Anas. Qādī 'Iyād said that in reference to the hair, sadl is to let it grow freely. What is meant by scholars here is to let the hair fall on the forehead and to put it into a lock. Parting the hair is sunnah because it is that to which the Prophet ﷺ reverted. It is related that when 'Umar ibn 'Abd al-'Azīz left the Jumu'ah prayer, he put guards at the door of the mosque to cut off the forelock of everyone who had not parted his hair. It is said that parting was part of the sunnah of Ibrāhīm ﷺ. Allah knows best.

साथ मुवाफ़क़त पसन्द करते थे। बाद में नबी ﷺ ने अपने बालों में माँग निकालनी शुरू की। इसे इمام बुखारी और इमाम मुस्लिम ने हज़रत अनसु से रिवायत किया है। क़ाज़ी इयाज़ ने कहा है कि बालों के बारे में सदल से मुराद यह है कि बालों को यूँ ही खुला छोड़ दिया जाए. उलमा की मुराद यहाँ यह है कि बालों को पेशानी पर गिराया जाए और उन्हें एक लट (लॉक) की शक्ल दी जाए। बालों में माँग निकालना सुन्नत है, क्योंकि यही वह अमल है जिसकी ओर नबी ﷺ बाद में लौटे. यह भी बयान किया जाता है कि जब उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ जुमे की नमाज़ से फ़ारिग होते, तो मस्जिद के दरवाज़े पर निगहबान खड़े कर देते और हर उस शख्स की पेशानी की लट काट दी जाती जो अपने बालों में माँग न निकालता. यह भी कहा गया है कि बालों में माँग निकालना हज़रत इब्राहीम ﷺ की सुन्नतों में से था. और अल्लाह ही ज़्यादा जानने वाला है.

Regarding white hair, it is a light and it is disliked to pluck it out. We find in an-Nasā'ī and Abū Dāwūd from 'Amr ibn Shu'ayb from his grandfather

सफ़ेद बालों के बारे में यह बात है कि वे नूर होते हैं, और उन्हें नोचना नापसंदीदाह है। हमें इमाम नसाई और इमाम अबू दाऊद के यहाँ अम्र बिन शुऐब से, वह अपने दादा से

that the Prophet ﷺ said, ‘Do not pluck out white hair. There is no Muslim who has become white-haired in Islam but that it will be a light for him on the Day of Rising and a good deed will be written for him and an error dropped.’ It is also disliked to dye it black, but permitted to use other colours as is reported in the hadith in which Abū Quḥāfah was brought to the Prophet ﷺ and his beard was white like wormwood. The Prophet ﷺ said, ‘Change this, but avoid black.’

He said, ‘I will make you a model for mankind.’

The word *imām* here means a model. It is used for a builder’s measure and also for a road because it directs the traveller. It means: ‘We will make you an imam for people, whom they will imitate in these qualities, and the righteous will follow you.’ So He made him an imam for the people who obey Him.

रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सफ़ेद बाल मत नोचो। जो मुसलमान इस्लाम में बूढ़ा होकर सफ़ेद बालों वाला हो जाए, उसके लिए वे क़यामत के दिन नूर होंगे, उसके लिए एक नेकी लिखी जाएगी और एक ख़ता मिटा दी जाएगी।” इसी तरह सफ़ेद बालों को काले रंग से रंगना भी नापसंदीदाह है, अलबत्ता दूसरे रंग इस्तेमाल करने की इजाज़त है। जैसा कि उस हदीस में आया है कि हज़रत अबू कुहाफ़ा़ को नबी ﷺ के पास लाया गया; उनकी दाढ़ी इसफ़ंद (एक पौधा) की तरह बिल्कुल सफ़ेद थी। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इसे बदल दो, लेकिन काले रंग से बचो।”

उन्होंने फ़रमाया: “मैं तुम्हें तमाम इंसानों के लिए पेशवा बनाने वाला हूँ।”

इस मक़ाम पर लफ़ज़ इमाम के मआनी नमूना / पेशवा के हैं। यह लफ़ज़ मिमार के पैमाने के लिए भी इस्तेमाल होता है, और रास्ते के लिए भी, क्योंकि वह मुसाफ़िर की रहनुमाई करता है। इसका मफ़हूम यह है: “हम तुम्हें लोगों के लिए इमाम बनाएँगे, ऐसा पेशवा कि लोग इन सिफ़ात में तुम्हारी इक़्तिदा करेंगे, और नेक लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे।”

~~~~~

|                                                                                            |                                                                                                                                                                                                                            |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>That is why all the nations agree that he was rightly guided, and Allah knows best.</p> | <p>पस अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीमं को उन लोगों के लिए इमाम बनाया जो उसकी इताअत करते हैं। इसी वजह से तमाम उम्मतें इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत इब्राहीमं हिदायतयाफ़ता थे। और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानने वाला है।</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                       |                                                          |
|-------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------|
| <p><b>He asked, ‘And what of my descendants?’</b></p> | <p>उन्होंने अर्ज़ किया: “और मेरी औलाद का क्या होगा?”</p> |
|-------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>This is a kind of supplication which consists of asking for information from Allah, meaning, ‘Lord, will You place this right guidance among my descendants?’ This is asking for information or it may be a simple question. Allah informed him that the disobedient and wrongdoers among them are not entitled to be models.</p> | <p>यह दुआ की एक क़िस्म है जिसमें अल्लाह तआला से मालूमात तलब की गई हैं, यानी: “ऐ रब! क्या आप यह सही हिदायत मेरी औलाद में भी मुकर्रर फ़रमाएँगे?” यह सवाल महज़ मालूमात के लिए भी हो सकता है या एक सादा इस्तिफ़सार भी। अल्लाह तआला ने उन्हें आगाह फ़रमाया कि उनकी औलाद में से नाफ़रमान और ज़ालिम लोग इस मंसब (नमूना/पेशवाई) के हक़दार नहीं होंगे।</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                            |                                                                                                                                                                                               |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>The word for ‘descendants’ is <i>dhurriyyah</i>. That is because Allah brought them out from the loins of Adam like atoms (<i>dharr</i>) when He made them bear witness against themselves. It is also said that it</p> | <p>औलाद के लिए जो लफ़ज़ इस्तेमाल हुआ है वह ज़ुर्रियह है। इसकी वजह यह है कि अल्लाह तआला ने उन्हें आदमं की पीठ से ज़र्र (ज़र्र) की तरह निकाला था, जब उसने उनसे खुद उनके खिलाफ़ गवाही ली थी।</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

~~~~~

is derived from *dhara'a*, when Allah created them.

यह भी कहा गया है कि यह लफ़्ज़ 'ज़रा' से मख़ूज़ है, यानी जब अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा किया।

**He said, 'My contract does not include the wrongdoers.'**

उन्होंने फ़रमाया: "मेरा अहद ज़ालिमों को शामिल नहीं करता।"

There is disagreement about what is meant by 'ahd (contract) here. Ibn 'Abbās said that it refers to Prophethood as did as-Suddī. Mujāhid said it refers to the imamate; Qatādah that it refers to faith; 'Aṭā' that it refers to mercy; and aḍ-Ḍaḥḥāk that it refers to the dīn of Allah. It is said that Allah's contract is His command and that the usage of 'ahd is found elsewhere in the Qur'an, as in 'Allah made a contract with us' (3:183), meaning 'commanded us'. Allah says: 'Did I not make a contract with you, tribe of Ādam?' (36:60) It means 'command' because the contract of Allah consists of His commands. So this āyah means: 'It is not possible for them to be in the same position as those accept the commands of Allah since the wrongdoers

यहाँ अहद से क्या मुराद है, इस बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। हज़रत इब्र अब्बासु ने फ़रमाया कि इससे मुराद नुबुव्वत है, और यही क़ौल सुद्दी का भी है। मुजाहिदु ने कहा कि इससे मुराद इमामत है; क़तादा के नज़दीक इससे मुराद ईमान है; अताअु ने कहा कि इससे मुराद रहमत है; और दहहाकु ने कहा कि इससे मुराद अल्लाह का दीन है। यह भी कहा गया है कि अल्लाह का अहद दरअसल उसका हुक्म है, और कुरआन में अहद का यह इस्तेमाल दूसरे मक़ामात पर भी मिलता है, जैसे: "अल्लाह ने हमसे अहद लिया था" (3:183), यानी "हमें हुक्म दिया था"। इसी तरह अल्लाह तआला का फ़रमान है: "क्या मैंने तुमसे, ऐ औलाद-ए-आदम, अहद नहीं लिया था?" (36:60), यानी "क्या मैंने तुम्हें हुक्म नहीं दिया था?" क्योंकि अल्लाह का अहद उसके अहकाम ही पर मुश्तमिल होता है। पस इस आयत का मफ़हूम यह है कि ज़ालिम लोग

~~~~~

do not establish them.’ Ma‘mar related that Qatādah also said that it means: ‘My contract concerning the Next World does not include the wrongdoers. As for in this world, it is possible wrongdoers may obtain it.’ Az-Zajjāj said, ‘This is a good view. It means that the hopes of the wrongdoers will not be realised: they are not safe from Allah’s punishment.’ Sa‘īd ibn Jubayr said that ‘wrongdoer’ means ‘idolater’.

उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जो अल्लाह के अहकाम को क़बूल करते और क़ायम करते हैं, क्योंकि ज़ालिम उन्हें क़ायम नहीं करते। मअमर ने रिवायत किया है कि क़तादा ने यह भी कहा कि इसका मतलब यह है: “आख़िरत के बारे में मेरा अहद ज़ालिमों को शामिल नहीं करता, अलबत्ता दुनिया में मुमकिन है कि ज़ालिमों को यह मंसब मिल जाए।” अज़ज़ाज ने कहा: “यह एक अच्छा क़ौल है। इसका मतलब यह है कि ज़ालिमों की उम्मीदें पूरी नहीं होंगी, और वे अल्लाह के अज़ाब से महफूज़ नहीं हैं।” सईद बिन जुबैर ने कहा कि यहाँ ज़ालिम से मुराद मुश्रिक है।

A group of scholars use this āyah as evidence that the imam must be one of the people of justice, good and excellence and have the ability to fulfill the task of leadership. This is borne out by the command of the Prophet ﷺ: ‘Do not dispute power with its people.’ The people of iniquity, injustice and wrong cannot be considered its people because of this āyah. This was the reason for the

उलमा के एक गिरोह ने इस आयत से यह इस्तिदलाल किया है कि इमाम (हाकिम) का अहल-ए-अदल, नेकी और फ़ज़ीलत में से होना ज़रूरी है, और उसमें क़ियादत की ज़िम्मेदारी अदा करने की सलाहियत भी होनी चाहिए। इसकी ताईद नबी ﷺ के इस इरशाद से होती है: “अहल-ए-इक़्तिदार से इक़्तिदार के मामले में झगड़ा न करो।” इस आयत की रोशनी में फ़िस्क़, जुल्म और नाइंसाफ़ी में मुबतला लोग इक़्तिदार

~~~~~

rebellion of Ibn az-Zubayr and that of al-Husayn, the rebellion of the virtuous people and scholars of Iraq against al-Hajjāj, and the rebellion of the people of Madīnah against the Umayyads at the Battle of al-Harrah when Muslim ibn ‘Uqbah attacked it.

के अहल नहीं समझे जा सकते। इसी बुनियाद पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की बगावत, हज़रत हुसैन का क्रियाम, इराक़ के सालेहीन और उलमा की हज्जाज बिन यूसुफ़ के खिलाफ़ बगावत, और वाकिआ-ए-हरह के मौक़े पर अहल-ए-मदीना की उमवियों के खिलाफ़ बगावत पेश आई—जब मुस्लिम बिन उक्बह ने मदीना पर हमला किया।

Most scholars take the view that perseverance in obedience to an unjust ruler is better than rebellion because the consequence of resisting him and rebelling against him is to replace security with fear, shed blood, give free rein to foolish people, attack the Muslims and corrupt the earth. The other is a position of a group of Mu‘tazilites and the position of the Khārijites.

अकसर उलमा का मौक़िफ़ यह है कि ज़ालिम हाकिम की इताअत पर सब्र करना बगावत से बेहतर है, क्योंकि उसके खिलाफ़ मुज़ाहमत और ख़ुरूज का अंजाम अक्सर अमन के बजाय ख़ौफ़, ख़ूनरेज़ी, नासमझ लोगों के ग़लबे, मुसलमानों पर हमलों और ज़मीन में फ़साद की सूरत में निकलता है। इसके बरख़िलाफ़ दूसरा मौक़िफ़ कुछ मुअतज़िला और ख़वारिज़ का है।

Ibn Khuwayzimandād said, ‘No wrongdoer can be a Prophet or judge or mufti or leader of the prayer. If such a thing occurs then what he relates of the Sharī‘ah is not accepted and his testimony is not accepted in

ख़ुवैज़िमन्दाद ने कहा है: “कोई ज़ालिम शख्स नबी, क़ाज़ी, मुफ़्ती या इमाम-ए-नमाज़ नहीं हो सकता। अगर ऐसी सूरत पेश आ जाए तो शरीअत के बारे में उसकी बयान की हुई बात क़बूल नहीं की जाएगी और न ही उसकी गवाही फ़ैसलों में

~~~~~

judgment, although he is not dismissed for his iniquity until those entitled to appoint and dismiss do so. His judgments that accord with what is correct are carried out. Mālik stated this about the Khārijites and the rebels: their judgments are not declared void when they entail some form of *ijtihad* and do not violate the consensus or oppose texts and this was the consensus of the Companions. That is because the Khārijites rebelled in their time but it is not transmitted that the imāms criticised their judgments or annulled any of them or repeated their collection of *zakāt* or objected to their carrying out the *hudūd* punishments when they had done it. That indicates that, when they use proper *ijtihad*, their rulings are not attacked.’

मो‘तबर होगी; अलबत्ता सिर्फ़ उसके फ़िस्क़ की बिना पर उसे मुअज़्ज़ल नहीं किया जाएगा, जब तक कि वे लोग, जो तक्रूर व मुअज़्ज़ली के हक़दार हैं, उसे मुअज़्ज़ल न कर दें। हाँ, उसके वे फ़ैसले जो हक़ के मुताबिक़ हों, नाफ़िज़ किए जाएँगे।” इमाम मालिक० ने यही बात ख़वारिज़ और बाग़ियों के बारे में भी बयान की है कि उनके फ़ैसले बातिल करार नहीं दिए जाएँगे, जब वे किसी दर्जे के इज्तिहाद पर मबनी हों और न इज्मा‘ के खिलाफ़ हों और न नुसूस के मुआरिज़। यही सहाबा-ए-कराम० का इज्माई तरीक़-ए-अमल था। इसकी दलील यह है कि सहाबा० के ज़माने में ख़वारिज़ ने ख़ुरूज किया, लेकिन यह मन्कूल नहीं कि इमामों ने उनके फ़ैसलों पर एतराज़ किया हो, या उनके किसी फ़ैसले को क़ालमअद करार दिया हो, या उनकी वसूली हुई ज़कात दोबारा वसूल की गई हो, या उनके नाफ़िज़ किए हुए हुदूद पर नक़ीर की गई हो। यह सब इस बात की दलील है कि जब वे सही इज्तिहाद की बुनियाद पर फ़ैसले करें तो उनके अहक़ाम पर एतराज़ नहीं किया जाता।

Ibn Khuwayzimandād said, ‘As

इब्र ख़ुवैज़िमन्दाद० ने कहा है कि

for taking stipends from unjust leaders, there are three possibilities. If everything in their possession has been gathered according to the just demands of the Sharī'ah, it is permitted to take the stipend, and the Companions and Tābi'ūn took it from al-Ḥajjāj and others. If the lawful and unjust are mixed, as is the case of rulers today, it is scrupulous to forgo it, but it is permitted for the needy to take it. In this case the ruler is like a thief who has both stolen property and lawful property in his possession and gives something as charity to someone. The recipient is permitted to accept it as ṣadaqah even though it is possible that it might be part of the stolen property. The same is true if such a ruler buys or sells: the contract is binding although it is more scrupulous to avoid it. If, however, everything that is in his possession is clearly unlawful, then it is not permitted to accept his ṣadaqah. If the

ज़ालिम हुक्मरानों से वज़ीफ़े (मशाहरह/तनख्वाह) लेने के बारे में तीन सूरतें पाई जाती हैं। अगर उनके क़ब्ज़े में मौजूद तमाम माल शरीअत के आदिलाना तक्राज़ों के मुताबिक़ जमा किया गया हो तो उससे वज़ीफ़ा लेना जायज़ है, और इसी बुनियाद पर सहाबाँ और ताबिईनँ ने हज्जाज बिन यूसुफ़ और इस जैसे हुक्मरानों से वज़ीफ़े लिए। अगर हलाल और नाजायज़ माल आपस में मिला हुआ हो, जैसा कि आज के अकसर हुक्मरानों के मामले में होता है, तो एहतियात का तक्राज़ा यह है कि उससे इज्तिनाब किया जाए, हालांकि मुहताज शख्स के लिए उसे लेना जायज़ है। इस सूरत में हुक्मरान उस चोर के मानिंद है जिसके पास चोरी का माल भी हो और हलाल माल भी, और वह किसी को सदक़ा दे; लेने वाले के लिए उसे सदक़ा के तौर पर क़बूल करना जायज़ है, अगरचे यह इमकान हो कि वह चोरी के माल में से हो। इसी तरह अगर ऐसा हुक्मरान ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त करे तो मामला नाफ़िज़ हो जाएगा, अगरचे उससे बचना ज़्यादा मुहतात है। अलबत्ता अगर उसके क़ब्ज़े में मौजूद सारा माल वाज़ेह तौर पर हराम हो तो

property in their possession is usurped and it is not known who is its owner and there is no claimant, then it is like what is found in the possession of thieves and highwaymen and is put in the treasury to await a claimant. If there is no one to claim it, the ruler spends as seems best in the best interests of the Muslims.

उसकी दी हुई सदका क़बूल करना जायज़ नहीं। और अगर उनके क़ब्जे में मौजूद माल ग़स्ब-शुदा हो और उसके असल मालिक का इल्म न हो और कोई दावेदार भी मौजूद न हो, तो उस माल का हुक्म वही होगा जो चोरों और डाकुओं के माल का होता है; उसे बैतुल-माल में रखा जाएगा ताकि किसी मुमकिन दावेदार का इंतज़ार किया जाए, और अगर कोई दावेदार सामने न आए तो हाकिम उसे मुसलमानों के बेहतरीन मुफ़ाद में जहाँ मुनासिब समझे खर्च करेगा।

And when We made the House a place of return, a sanctuary for mankind, and they took the Maqām of Ibrāhīm as a place of prayer. We contracted with Ibrāhīm and Ismā‘īl: ‘Purify My House for those who circle it, and those who stay there, and those who bow and who prostrate.’ [2:125]

और (याद करो) जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए बार-बार लौटने की जगह और अमन का मक़ाम बनाया, और (हुक्म दिया कि) मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ। और हमने इब्राहीम और इस्माइल से अहद लिया: “मेरे घर को उन लोगों के लिए पाक रखो जो उसका तवाफ़ करते हैं, और जो वहाँ क़ियाम करते हैं, और जो रुकू और सजदा करने वाले हैं।” [2:125]

And when We made the House a place of return, a sanctuary for mankind,

और (याद करो) जब हमने इस घर को लोगों के लिए बार-बार लौटने की जगह और अमन का मक़ाम बनाया।

The House is the Ka'bah. *Mathābah* (place of return) is the form of the noun used for place, derived from the verb *thāba*, 'to return'. It is called that because people return to it year after year. The use of the word 'sanctuary' in this āyah was taken by Abū Ḥanīfah and a group of *fuqahā'* as evidence for not imposing the *ḥadd* punishment in the Ḥaram when an adulterer or thief takes refuge there. In making that ruling they also rely on the words of Allah: '*All who enter it are safe.*' (3:97) The sound position is that the *ḥudūd* punishments are carried out in the Ḥaram and that this āyah is abrogated although there is agreement that the killing does not take place in the House but outside of it. The disagreement is about killing inside the Ḥaram. If someone violates a *ḥadd* there, he is punished there. If someone attacks in it, he is fought and killed where he is. Abū Ḥanīfah says that the one who seeks refuge in the

यह घर काबा है। मसाबा (बार-बार लौटने की जगह) इस्म-ए-मकान है, जो फ़ेल थाबा (लौटना) से मख़ूज़ है, और इसे यह नाम इसलिए दिया गया है कि लोग हर साल उसकी तरफ़ लौटते हैं। इस आयत में लफ़ज़ हरम / अमन का मक़ाम के इस्तेमाल से इमाम अबू हनीफ़ाँ और फुक्रहा के एक गिरोह ने यह इस्तिदलाल किया है कि अगर कोई ज़ानी या चोर हरम में पनाह ले तो वहाँ उस पर हद क़ायम नहीं की जाएगी। इस हुक्म में वे अल्लाह तआला के इस इरशाद पर भी भरोसा करते हैं: "जो उसमें दाख़िल हो गया वह अमन में है" (3:97)। राजेह (दुरुस्त) मौक़िफ़ यह है कि हुदूद-ए-शरइय्या हरम में भी नाफ़िज़ की जाती हैं, और यह आयत मंसूख़ है; अलबत्ता इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि क़त्ल काबा के अंदर नहीं किया जाता, बल्कि उसके बाहर। इख़्तिलाफ़ हरम के अंदर क़त्ल के बारे में है। अगर कोई शख़्स हरम में हद का मौजिब जुर्म करे तो वहीं उसे सज़ा दी जाएगी, और अगर वह हरम में हमला करे तो वहीं उससे क़िताल किया जाएगा और क़त्ल भी किया जा सकता है। इमाम अबू हनीफ़ाँ के नज़दीक़ जो शख़्स हरम में पनाह ले,

Haram is not killed or pursued and remains confined in it until he dies or leaves. We kill him with the sword and Allah kills him by hunger and constriction, thus condemning him to a worse death. The fact that it is a sanctuary reinforces the command to face the Ka'bah in the prayer because Jerusalem does not have this virtue and people do not make *hajj* to it.

उसे न क़त्ल किया जाएगा और न उसका तआकुब किया जाएगा; वह हरम में महसूर रहेगा यहाँ तक कि वह मर जाए या खुद बाहर निकल आए। इस सूत में हम उसे तलवार से नहीं मारते और अल्लाह तआला उसे भूख और तंगी के ज़रिए हलाक करता है, जो उसके लिए ज़्यादा सख़्त अंजाम है। हरम होना इस बात को और मज़बूत करता है कि नमाज़ में काबा की तरफ़ रुख़ करने का हुक्म क्यों दिया गया, क्योंकि बैतुल-मक्दिस को यह फ़ज़ीलत हासिल नहीं, न लोग उसकी तरफ़ हज्ज करते हैं।

and they took the Maqām of Ibrāhīm as a place of prayer.'

और उन्होंने मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लिया।

There are two readings of the verb 'to take' in this phrase. Nāfi' and Ibn 'Āmir recite it as *ittakhadhū*, making it a report about those of the followers of Ibrāhīm who prayed there, added to 'We made' and so it reads: 'they took the Maqām of Ibrāhīm as a place of prayer.' Or it means 'when We made' and 'when they took'. The second reading is *ittakhidhū* in the imperative mood so the

इस जुमले में फ़ेल "इत्तिखाज़" (लेना) की दो क़िराअतें हैं। नाफ़े' और इब्न आमिर' इसे इत्तख़जू पढ़ते हैं, जिसकी बुनियाद पर यह ख़बर बन जाती है—यानी हज़रत इब्राहीम' के पैरौकारों के बारे में बयान है कि वे वहाँ नमाज़ पढ़ते थे। इस सूत में यह "हमने बनाया" के साथ मिला हुआ होगा और मआनी यूँ होंगे: "और उन्होंने मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लिया।" या इसका मफ़हूम यह होगा कि: "जब हमने

~~~~~

meaning is a command and the phrase reads: ‘Take the Maqām of Ibrāhīm as a place of prayer.’ According to the first, there is one sentence, and according to the second, there are two sentences. The majority read it with a *kasrah* as a command and disconnect it from the first sentence.

बनाया” और “जब उन्होंने बनाया।” दूसरी क़िराअत इत्तख़िज़ू है, जो सीगा-ए-अमर में है। इस एतिबार से यह एक हुक्म बनता है, और इबारत का मफ़हूम यूँ होगा: “मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो।” पहली क़िराअत के मुताबिक़ यह एक ही जुमला बनता है, जबकि दूसरी क़िराअत के मुताबिक़ दो जुमले बनते हैं। जम्हूर ने इसे कसरा के साथ, बतौर हुक्म, पढ़ा है और इसे पहले जुमले से जुदा माना है।

Ibn ‘Umar reported that ‘Umar said, ‘I coincided with my Lord on three occasions: regarding the Maqām of Ibrāhīm, the ḥijāb and the captives of Badr.’ Muslim and others transmitted it. A similar report comes from al-Bukhārī. He suggested praying behind the Maqām and then this was revealed. He suggested the ḥijāb and 33:53 was revealed.

हज़रत इब्र उमरुँ रिवायत करते हैं कि हज़रत उमरुँ ने फ़रमाया: “मैं तीन मौक़ों पर अपने रब की मुवाफ़क़त में रहा: मक़ाम-ए-इब्राहीम के बारे में, हिजाब के बारे में, और बद्र के कैदियों के बारे में।” इस रिवायत को इमाम मुस्लिमुँ और दूसरे मुहदिसीन ने नक़ल किया है, और इसी मज़मून की एक रिवायत इमाम बुख़ारीुँ के यहाँ भी आई है। हज़रत उमरुँ ने मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ने की राय दी, तो उसी के मुताबिक़ आयत नाज़िल हुई। इसी तरह उन्होंने हिजाब के बारे में मशवरा दिया, तो उस पर 33:53 नाज़िल हुई।

The word *maqām* means a

लफ़ज़ मक़ाम के मआनी हैं खड़े होने

~~~~~

place where you stand. There are various statements about the Maqām. The soundest is that it is the stone which people recognise today and behind which they pray the two *rak'ahs* after completing the *Tawāf* of Arrival. This is the position of Jābir ibn 'Abdullāh, Ibn 'Abbās, Qatādah and others. In *Ṣaḥīḥ Muslim*, in a long hadith, Jābir said, 'When the Prophet ﷺ saw the House, he greeted the Corner and then trotted three circuits and walked four. Then he went to the Maqām Ibrāhīm and recited, "they took the Maqām of Ibrāhīm as a place of prayer," and prayed two *rak'ahs* in which he recited *Sūrat al-Ikhlāṣ* and *Sūrat al-Kāfirūn*.' This indicates that the two *rak'ahs* of *tawāf* and other prayers are better for the people of Makkah. In another transmission, as will be mentioned, it indicates that *tawāf* is better for non-resident visitors.

की जगह। मक़ाम-ए-इब्राहीम के बारे में मुख्तलिफ़ अक़वाल मन्कूल हैं, मगर सबसे ज़्यादा सही क़ौल यह है कि इससे मुराद वही पत्थर है जिसे लोग आज पहचानते हैं और जिसके पीछे तवाफ़-ए-कुदूम मुकम्मल करने के बाद दो रकअत नमाज़ अदा की जाती है। यही मौक़िफ़ हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत इब्र अब्बास, क़तादा और दूसरे अहल-ए-इल्म का है। सहीह मुस्लिम में एक तवील हदीस में हज़रत जाबिर बयान करते हैं: "जब नबी ﷺ ने बैतुल्लाह को देखा तो आपने हज़्र-ए-असवद का इस्तिलाम किया, फिर तीन चक्कर तेज़ी के साथ लगाए और चार आम चाल से पूरे किए। फिर आप ﷺ मक़ाम-ए-इब्राहीम की तरफ़ आए और यह आयत तिलावत फ़रमाई: 'और उन्होंने मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लिया', फिर आपने ﷺ दो रकअत नमाज़ अदा की, जिनमें सूरह अल-इख़्लास और सूरह अल-काफ़िरून की तिलावत की।" यह हदीस इस बात की दलील है कि तवाफ़ के बाद की दो रकअतें और दूसरी नमाज़ें अहल-ए-मक्का के लिए ज़्यादा अफ़ज़ल हैं। जबकि एक दूसरी

~~~~~

|  |                                                                                                                         |
|--|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|  | <p>रिवायत—जिसका ज़िक्र आगे आएगा—इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि ग़ैर मुक़ीम ज़ाइरीन के लिए तवाफ़ ज़्यादा अफ़ज़ल है।</p> |
|--|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>In al-Bukhārī it states that it is the stone which Ibrāhīm climbed on when he was too weak to lift up the stones which Ismā‘īl handed him when they were building the House and his feet sank into it. Anas said, ‘In the Maqām I saw the trace of his fingers and heels and the hollows of his feet. But that disappeared when people continued to wipe it with their hands.’ Al-Qushayrī mentioned it. As-Suddī said, ‘The Maqām is the stone which Ismā‘īl’s wife placed under Ibrāhīm’s feet when she washed his head.’ Ibn ‘Abbās, Mujāhid, ‘Ikrimah and ‘Aṭā’ said that the Maqām is all of the ḥajj. ‘Aṭā’ said that it is ‘Arafah, Muzdalifah and the <i>jamrahs</i>. Ash-Sha‘bī said that. An-Nakha‘ī said that all of the Ḥaram is the Maqām of Ibrāhīm. Mujāhid said that.</p> | <p>सहीह बुख़ारी में यह बयान आया है कि मक़ाम-ए-इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर हज़रत इब्राहीमं उस वक़्त चढ़े थे जब वे इतने कमज़ोर हो गए थे कि हज़रत इस्माईलं की तरफ़ से दिए गए पत्थरों को खुद उठा नहीं सकते थे, जब दोनों मिलकर बैतुल्लाह की तामीर कर रहे थे, और उनके क़दम उस पत्थर में धँस गए थे। हज़रत अनसु ने कहा: “मैंने मक़ाम-ए-इब्राहीम में उनकी उँगलियों और एड़ियों के निशान और क़दमों के गड्ढे देखे थे, लेकिन बाद में लोगों के बार-बार हाथ फेरने की वजह से वे मिट गए।” इस बात का ज़िक्र इमाम कुशैरी ने किया है। सुद्वी ने कहा: “मक़ाम-ए-इब्राहीम वह पत्थर है जिसे हज़रत इस्माईलं की ज़ौजा ने हज़रत इब्राहीमं के क़दमों के नीचे रखा था जब वह उनका सर धो रही थीं।” हज़रत इब्न अब्बासु, मुजाहिदु, इक्रिमाु और अताअु ने कहा है कि मक़ाम-ए-इब्राहीम से मुराद पूरा हज्ज है। अताअु ने वज़ाहत की कि इससे</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

~~~~~

|  |                                                                                                                                                                 |
|--|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|  | <p>मुराद अरफ़ात, मुज़दलिफ़ा और जमरात हैं, और यही क्रौल शअबीं का भी है। नखईं ने कहा कि पूरा हरम ही मक़ाम-ए-इब्राहीम है, और यही बात मुजाहिदं से भी मन्कूल है।</p> |
|--|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>The sound position about the Maqām is the first statement since it is confirmed in the <i>Ṣaḥīḥ</i>. Abū Nu‘aym transmitted from Muḥammad ibn Sūqah from Muḥammad ibn al-Munkadir that Jābir said, ‘The Prophet ﷺ looked at a man between the corner and the Maqām — or the door and the Maqām — making supplication. He was saying, “O Allah, forgive so-and-so.” The Prophet ﷺ asked him, “What is this?” He said, “A man charged me to supplicate for him in this Maqām.” He said, “Return. Your companion is forgiven.”’ It has further paths of transmission.</p> | <p>मक़ाम-ए-इब्राहीम के बारे में राजेह (दुरुस्त) क्रौल वही पहला है, क्योंकि वह सहीह हदीस से साबित है। अबू नुऐमं ने मुहम्मद बिन सूक़ह से, उन्होंने मुहम्मद बिन अल-मुन्कदिर से रिवायत किया है कि हज़रत जाबिरं ने कहा: “नबी ﷺ ने एक शख्स को रुकन और मक़ाम के दरमियान—या दरवाज़े और मक़ाम के दरमियान—दुआ करते हुए देखा। वह कह रहा था: ‘ऐ अल्लाह! फ़लाँ को बख़्श दे।’ नबी ﷺ ने उससे फ़रमाया: ‘यह क्या है?’ उसने अर्ज़ किया: ‘एक शख्स ने मुझे इस मक़ाम पर उसके लिए दुआ करने को कहा है।’ आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘लौट जाओ, तुम्हारा साथी बख़्श दिया गया है।’” इस रिवायत की और भी सनदें (तुरुक) मन्कूल हैं।</p> |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                        |                                                                                |
|------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------|
| <p><b>We contracted with Ibrāhīm and Ismā‘īl: ‘Purify My House</b></p> | <p><b>और हमने इब्राहीमं और इस्माईलं से अहद लिया: “मेरे घर को पाक रखो।”</b></p> |
|------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------|

|                                       |                                          |
|---------------------------------------|------------------------------------------|
| <p>‘We contracted’ (‘ahidnā) here</p> | <p>यहाँ “हम ने अहद लिया” (आहद्रा) के</p> |
|---------------------------------------|------------------------------------------|

~~~~~

means 'We commanded' or 'We revealed to'. The Kufans say that 'purify' means to clear it of idols, as Mujāhid and az-Zuhrī said. 'Ubayd ibn 'Umayr and Sa'īd ibn Jubayr said that it means to purify it of evil things and doubt. It is said that it means from unbelievers. As-Suddī said, 'They built it and founded it on purity and with the intention of purity and so it is connected to the words of the Almighty: "Founded on taqwā." (9:108) By saying "My House" Allah ascribes it to Himself to honour it. It is like the relationship of a creature to the Creator and a slave to his Master.' He says, 'My House' to honour it. When Allah says: 'Purify My House', He means all mosques, and so its ruling is that of cleanliness and purification. The Ka'bah is mentioned because it was the only mosque at that time or because it is the most respected House. The first view is more likely, and Allah knows best. We read in the Revelation: *In*

अर्थ "हम ने हुक्म दिया" या "हम ने वही की" के हैं। अहल-ए-कूफ़ा के नज़दीक "पाक रखो" से मुराद उसे बुतों से पाक करना है, जैसा कि मुजाहिद और जुहरी ने कहा। उबैद बिन उमैर और सईद बिन जुबैर के नज़दीक इसका मतलब बुरे उमूर और शुक्क से पाक करना है, और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद काफ़िरो से पाक रखना है। सुदी ने कहा: "उन्होंने उसे तामीर किया और पाकीज़गी पर बुनियाद रखी, पाकीज़गी की नीयत के साथ; इसी लिए यह अल्लाह तआला के इस फ़रमान से मरबूत है: 'जो तक्रवा पर क़ायम की गई' (9:108)।" अल्लाह तआला का "मेरे घर" कहना उसे तशरीफ़ और तकरीम देने के लिए है; जैसे मखलूक का अपने ख़ालिक से ताल्लुक और गुलाम का अपने मालिक से। इसी शरफ़ और इज़्ज़त के इज़हार के लिए फ़रमाया गया: "मेरा घर"। और जब अल्लाह फ़रमाता है: "मेरे घर को पाक रखो", तो इससे मुराद तमाम मसाजिद हैं; लिहाज़ा उनका हुक्म तहारत और पाकीज़गी का है। काबा का ख़ास ज़िक्र या तो इस लिए है कि उस वक़्त वही वाहिद मस्जिद थी, या इस लिए

~~~~~

*houses which Allah has permitted to be built. (24:36)*

कि वह सब से ज़्यादा मुअज़्ज़ा घर है। पहला क़ौल ज़्यादा करीन-ए-क्रियास है, और अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है। हम वही में यह भी पढ़ते हैं: "उन घरों में जिन के बुलंद किए जाने की अल्लाह ने इजाज़त दी है" (24:36)।

'Umar ibn al-Khattāb related that he heard the noise of a man in the mosque. He said, 'What is this? Do you know where you are?' Hudhayfah said that the Prophet ﷺ said, 'Allah revealed to me, "Brother of the warners! Brother of the Messengers! Warn your people to only enter one of My houses with sound hearts, truthful tongues, clean hands and pure private parts. One should not enter one of My houses as long as he has an injustice on his head. I will curse him as long as he stands before Me until that injustice is restored to its people. Then I am his hearing with which he hears and his sight with which He sees, and he is one of My friends and chosen ones. He goes with the

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि उन्होंने मस्जिद में एक शख्स की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया: "यह क्या शोर है? क्या तुम जानते हो कि तुम कहाँ हो?" हज़रत हुज़ैफ़ा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ वही की: 'ऐ डराने वालों के भाई! ऐ रसूलों के भाई! अपनी क़ौम को ख़बरदार करो कि वे मेरे घरों में सिर्फ़ ऐसे दिलों के साथ दाख़िल हों जो दुरुस्त हों, ऐसी ज़बानों के साथ जो सच्ची हों, ऐसे हाथों के साथ जो पाक हों, और ऐसी शर्मगाहों के साथ जो पाकीज़ा हों। कोई शख्स मेरे घरों में इस हाल में दाख़िल न हो कि उसके ज़िम्मे किसी पर जुल्म हो। जब तक वह मेरे सामने खड़ा रहेगा, मैं उस पर लानत करता रहूँगा, यहाँ तक कि वह जुल्म उसके अहल को वापस कर दे। फिर मैं उसकी समाअत बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, और उसकी

~~~~~

Prophets, truthful, martyrs and righteous.”

बसारात बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, और वह मेरे दोस्तों और बरगुज़ीदा लोगों में शामिल हो जाता है। वह अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन के साथ होगा।”

Those who circle it, जो उसका तवाफ़ करते हैं,

The word used here is *tā'ifin* and its apparent meaning is to circumambulate it, as 'Atā' says. Sa'īd ibn Jubayr says that it means 'strangers who come to Makkah'. That is somewhat unlikely.

यहाँ प्रयुक्त शब्द ताइफ़ीन है, जिसका प्रकट अर्थ उसका तवाफ़ करना है, जैसा कि अताअ कहते हैं। सईद बिन जुबैर कहते हैं कि इससे मुराद मक्का आने वाले परदेसी हैं, लेकिन यह अर्थ कुछ अधिक संभावित नहीं लगता।

and those who stay there, और वे जो वहाँ क्रियाम करते हैं,

This is also said to mean those who live in its vicinity, or even, as Ibn 'Abbās states, those who pray there. It is said that it means 'those who sit there without doing *tawāf*.'

इस से यह मानी भी लिया गया है कि इस से मुराद वह लोग हैं जो इसके आस-पास रहते हैं, या जैसा कि इब्न-ए-अब्बासँ बयान करते हैं, वह लोग जो वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं। यह भी कहा गया है कि इस से मुराद वह लोग हैं जो वहाँ बैठते हैं मगर तवाफ़ नहीं करते।

and those who bow and who prostrate.' और वे जो रुकूअ करते हैं और जो सज्दा करते हैं।

Bowing and prostrating refer to praying towards the Ka'bah in the Ḥaram. These two things are mentioned because they are the states in which the one who

रुकूअ और सज्दा से मुराद हरम में काबा की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ना है। इन दोनों हालतों का ख़ास तौर पर ज़िक्र इसलिए किया गया है कि इन्हीं हालतों में नमाज़ पढ़ने वाला

prays is closest to Allah. Ash-Shāfi‘ī, Abū Hanīfah, ath-Thawrī and a group of the Salaf used this āyah as evidence for the permission to pray both the *farḍ* and *nāfilah* prayers inside the House. Ash-Shāfi‘ī said that if you pray inside it and face one of its walls, then your prayer is allowed. If you pray towards the open door, your prayer is invalid. That also applies to someone who prays on top of it because he does not face anything. Mālik said, ‘You may not pray a *farḍ* or *sunnah* in it, but you may pray *nāfilah* prayers inside. If someone prays the *farḍ* prayer there, he must repeat it if it is still within the time of that prayer.’ Aṣḥab said he must always repeat it, even outside the time.

अल्लाह के सबसे ज़्यादा करीब होता है। इमाम शाफ़िई, इमाम अबू हनीफ़ा, सुफ़यान सौरी और सलफ़ के एक गिरोह ने इस आयत को बैतुल्लाह के अंदर फ़र्ज़ और नफ़ल दोनों नमाज़ें पढ़ने के जवाज़ की दलील बनाया है। इमाम शाफ़िई ने कहा कि अगर कोई शख्स बैतुल्लाह के अंदर नमाज़ पढ़े और उसकी किसी दीवार की तरफ़ रुख़ करे तो उसकी नमाज़ दुरुस्त है, लेकिन अगर वह खुले दरवाज़े की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़े तो उसकी नमाज़ दुरुस्त नहीं। यही हुक्म उस शख्स पर भी लागू होता है जो बैतुल्लाह की छत पर नमाज़ पढ़े, क्योंकि वह किसी चीज़ की तरफ़ रुख़ नहीं करता। इमाम मालिक ने कहा: बैतुल्लाह के अंदर न फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी जा सकती है और न सुन्नत, अलबत्ता नफ़ल नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं। अगर कोई शख्स वहाँ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ ले तो, जब तक उस नमाज़ का वक़्त बाक़ी हो, उस पर उस नमाज़ का इआदा लाज़िम है। अस्बग़ ने कहा कि उस पर हर हाल में इआदा लाज़िम है, ख़्वाह नमाज़ का वक़्त गुज़र ही क्यों न चुका हो।

This is sound according to what

यह बात उस रिवायत के मुताबिक़

Muslim related from Ibn ‘Abbās. He said, ‘Usāmah ibn Zayd told me that when the Prophet ﷺ entered the House, he made supplication in all its corners but did not pray until he had come out. When he came out, he prayed two *rak‘ahs* facing the Ka‘bah and said, “This is the *qiblah*.”’ Al-Bukhārī related that Ibn ‘Umar said, ‘The Messenger of Allah ﷺ entered with Usāmah ibn Zayd, Bilāl, and ‘Uthmān ibn Ṭalḥah al-Ḥajabī and they locked the door behind them. When they opened the door, I was the first to enter and met Bilāl. I asked him, “Did the Messenger of Allah ﷺ pray?” “Yes,” he answered, “between the two pillars on the right.”’ Muslim transmitted it. It says in it: ‘He had two pillars on his left, a pillar on his right and three pillars behind him.’ At that time the House had six pillars. It is possible that ‘pray’ means to make supplication as Usāmah said, and it is also possible that it is the normal

दुरुस्त है जिसे मुस्लिम ने इब्न-ए-अब्बास से नक़ल किया है। उन्होंने कहा: उसामा बिन ज़ैद ने मुझ से बयान किया कि जब नबी ﷺ बैतुल्लाह में दाखिल हुए तो आपने ﷺ उसके तमाम कोनों में दुआ की, लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ी, यहाँ तक कि बाहर तशरीफ़ ले आए। फिर जब आप ﷺ बाहर आए तो काबा की तरफ़ रुख करके दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया: “यही क़िब्ला है।” बुखारी ने इब्न-ए-उमर से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ उसामा बिन ज़ैद, बिलाल और उस्मान बिन तल्हा अल-हजबी के साथ बैतुल्लाह में दाखिल हुए और उन्होंने दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। जब दरवाज़ा खोला गया तो मैं सबसे पहले अंदर दाखिल हुआ और बिलाल से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे पूछा: “क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ पढ़ी थी?” उन्होंने जवाब दिया: “हाँ, दाहिनी जानिब के दो सुतूनों के दरमियान।” मुस्लिम ने भी यह रिवायत नक़ल की है, और उसमें ये अल्फ़ाज़ हैं: “आप ﷺ के बाएँ जानिब दो सुतून थे, दाएँ जानिब एक सुतून था और आपके पीछे तीन सुतून थे।” उस वक़्त बैतुल्लाह में छः सुतून थे। यह

prayer.

इहतिमाल है कि यहाँ 'नमाज़' से मुराद दुआ हो, जैसा कि उसामाँ ने बयान किया, और यह इहतिमाल भी है कि इससे मुराद आम (मअरूफ़) नमाज़ हो।

Ibn al-Mundhir and others related that Usāmah said, 'The Messenger of Allah ﷺ saw some images in the Ka'bah. I brought some water in a bucket with which he washed them off.' Abū Dāwūd at-Ṭayālisī transmitted from Ibn Abī Dhi'b from 'Abd ar-Raḥmān ibn Mahrān from 'Umayr, the freedman of Ibn 'Abbās, that Usāmah ibn Zayd said, 'I went in to the Messenger of Allah ﷺ in the Ka'bah and he saw some images. He called for a bucket of water. I brought it to him and he began to wash them off, saying, "May Allah fight a people who make images of what they did not create!"' It is possible that the Prophet ﷺ prayed while Usāmah had gone to look for water and Bilāl saw him but Usāmah did not. Affirming it is more proper

इब्नुल-मुंधिर और दूसरे मुहदिसीन ने उसामाँ से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने काबा में कुछ तस्वीरें देखीं, तो मैं एक डोल में पानी ले आया, जिससे आपने ﷺ उन्हें धो डाला। अबू दाऊद अत्तयालिसी ने इब्न अबी ज़िब के ज़रिये, अब्दुर्रहमान बिन महरान से, और उन्होंने उमैर (जो इब्न अब्बास के आज़ाद किए हुए गुलाम थे) से रिवायत की है कि उसामा बिन ज़ैद ने कहा: मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ काबा के अंदर दाखिल हुआ तो आपने ﷺ कुछ तस्वीरें देखीं। आपने ﷺ पानी का डोल मंगवाया, मैं वह आपके पास ले आया, तो आपने ﷺ उन्हें धोना शुरू किया और फ़रमाते जाते थे: "अल्लाह उन लोगों को हलाक करे जो ऐसी चीज़ों की तस्वीरें बनाते हैं जिन्हें उन्होंने पैदा नहीं किया।" यह मुमकिन है कि नबी ﷺ ने उस वक़्त नमाज़ पढ़ी हो जब उसामाँ पानी लाने गए हुए थे, और बिलाल ने आपको नमाज़ पढ़ते

than denying it. Usāmah himself said, ‘People took what Bilāl said and left what I said.’ Mujāhid related that ‘Abdullāh ibn Ṣafwān said, ‘I asked ‘Umar ibn al-Khaṭṭāb, “How did the Messenger of Allah ﷺ pray when he entered the Ka‘bah?”’ “Two rak‘ahs,” he replied.’

देखा हो, जबकि उसामाँ ने न देखा हो। इस्बात को इख्तियार करना नफ़ी के मुक़ाबले में ज़्यादा मुनासिब है। खुद उसामाँ ने कहा: “लोगों ने बिलालँ की बात ले ली और मेरी बात छोड़ दी।” मुजाहिद ने रिवायत किया है कि अब्दुल्लाह बिन सफ़वान ने कहा: मैंने उमर बिन अल-खत्ताबँ से पूछा: “जब रसूलुल्लाह ﷺ काबा में दाखिल हुए तो आपने ﷺ किस तरह नमाज़ पढ़ी?” उन्होंने जवाब दिया: “दो रकअतें।”

This is possible for *nāfilah* prayers. We do not know of any disagreement between scholars on the validity of *nāfilah* prayers in the Ka‘bah. That is not the case with *fard* prayers because Allah Almighty specified direction when He says: ‘Turn your face, therefore, towards the Masjid al-Ḥaram.’ (2:144) When he said, ‘This is the *qiblah*’ when he came out, he specified it as Allah had specified it. If the *fard* prayer had been valid inside it, he would not have said, ‘This is the *qiblah*.’ This

यह बात नफ़ल नमाज़ों के बारे में मुमकिन है। काबा के अंदर नफ़ल नमाज़ के सही होने पर अहल-ए-इल्म के दरमियान किसी इख्तिलाफ़ का हमें इल्म नहीं। लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ों का मामला ऐसा नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला ने सिम्त को सराहत के साथ मुतअय्यन फ़रमाया है, चुनांचे इरशाद है: “पस अपना रुख मस्जिद -ए-हराम की तरफ़ फेर लो” (2:144)। जब नबी ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आपने ﷺ फ़रमाया: “यही क़िब्ला है”—इसके ज़रिये आपने ﷺ उसी तरह क़िब्ला को मुतअय्यन फ़रमाया जैसे अल्लाह तआला ने मुतअय्यन किया था। अगर फ़र्ज़

is a sound manner of combining the two hadiths.

नमाज़ काबा के अंदर दुरुस्त होती तो आपने ﷺ यह न फ़रमाया होता कि "यही क़िब्ला है।" यह दोनों अहादीस के दरमियान तल्बीक़ की एक दुरुस्त और मज़बूत सूरत है।

There is also disagreement about praying on top of it. Ash-Shāfi'ī said what we mentioned. Mālik said, 'Whoever prays on top of it should repeat the prayer within the time.' Some of Mālik's people said that it should always be repeated. Abū Hanīfah says that one who prays there does not owe anything.

उसकी छत पर नमाज़ पढ़ने के बारे में भी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। इमाम शाफ़िई ने वही बात कही है जिसका हमने ज़िक्र किया। इमाम मालिक ने कहा: "जो शख्स उसकी छत पर नमाज़ पढ़े, वह नमाज़ के वक़्त के अंदर उसका इआदा करे।" इमाम मालिक के कुछ असहाब ने कहा है कि उस नमाज़ का हर हाल में इआदा किया जाएगा। जबकि इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक जो शख्स वहाँ नमाज़ पढ़े, उस पर कुछ भी लाज़िम नहीं आता।

They also disagree about which is better: praying at the House or *tawāf* of it. Mālik said that *tawāf* is better for the people of other places and that prayer is better for the people of Makkah. That is mentioned from Ibn 'Abbās, 'Aṭā' and Mujāhid. The majority say that the prayer is better. We find in a report: 'If it had not been for

इस बारे में भी इख़्तिलाफ़ है कि काबा के पास कौन-सा अमल ज़्यादा अफ़ज़ल है: नमाज़ पढ़ना या उसका तवाफ़ करना। इमाम मालिक ने कहा कि बाहर के इलाक़ों से आने वालों के लिए तवाफ़ अफ़ज़ल है, जबकि मक्का के रहने वालों के लिए नमाज़ अफ़ज़ल है। यही क़ौल इब्न-ए-अब्बास, अता और मुजाहिद से भी मनकूल है। जमहूर अहल-ए-इल्म का कहना है कि नमाज़ ज़्यादा

humble men, bowing old men, suckling babes, and grazing animals, We would have poured the punishment on you.’ Abū Bakr Aḥmad ibn ‘Alī ibn Thābit the Khaṭīb said that ‘Abdullāh ibn Mas‘ūd said that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘If it had not been that among you are humble men, grazing animals and suckling babes, the punishment would have poured down on the sinners.’ Abū Dharr said, ‘The prayer is best, so do a lot of it,’ Al-Ajurri transmitted it. There are many reports that attest to the excellence of the prayer and prostration. Allah knows best.

अफ़ज़ल है। हमें एक रिवायत में यह मज़मून मिलता है: “अगर आज़िज़ व फ़रूतन लोग, रुकूअ करने वाले बूढ़े, दूध पीते बच्चे और चरने वाले जानवर न होते तो हम तुम पर अज़ाब उँडेल देते।” अबू बक्र अहमद बिन अली बिन साबित अल-खतीब ने रिवायत किया है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम में आज़िज़ लोग, चरने वाले जानवर और दूध पीते बच्चे न होते तो गुनहगारों पर अज़ाब नाज़िल हो चुका होता।” अबू ज़र्र ने कहा: “नमाज़ सबसे अफ़ज़ल अमल है, लिहाज़ा इसकी कसरत करो।” इसे अल-अजुरी ने रिवायत किया है। नमाज़ और सज्दा की फ़ज़ीलत पर दलील करने वाली बहुत-सी रिवायात मौजूद हैं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

And when Ibrāhīm said, ‘My Lord, make this a place of safety and provide its inhabitants with fruits — all of them who believe in Allah and the Last Day,’ He said, ‘I will let anyone who becomes an unbeliever enjoy himself a

और जब इब्राहीम ने कहा: “ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन की जगह बना दे और इसके रहने वालों को फलों से रोज़ी अता फ़रमा—उन में से जो अल्लाह और यौम-ए-आखिरत पर ईमान लाएँ” तो उसने फ़रमाया: “और जो कुफ़र करेगा, मैं उसे थोड़ी मुद्दत तक

~~~~~

little but then I will drive him to the punishment of the Fire. What an evil destination!'  
[2:126]

फ़ायदा उठाने दूँगा, फिर उसे आग के अज़ाब की तरफ़ धकेल दूँगा। और वह क्या ही बुरा ठिकाना है!”  
[2:126]

And when Ibrāhīm said, ‘My Lord, make this a place of safety and provide its inhabitants with fruits —

और जब इब्राहीम ने कहा: “ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन की जगह बना दे और इसके रहने वालों को फलों से रोज़ी अता फ़रमा—”

This means Makkah. He prayed for his descendants and others to have security and ample livelihood there. It is related that when he made this supplication, Allah commanded Jibrīl to uproot the town of Ṭā'if from Syria and he then carried it around the Ka'bah for a week, which is why it is called Ṭā'if. Then he set it down in Tihāmah. Makkah and what was around it was a desert without water or plants. Allah blessed the area around it like Ṭā'if and other places and plants grew.

इस से मुराद मक्का है। हज़रत इब्राहीम ने वहाँ अपनी औलाद और दूसरों के लिए अमन और कुशादा रोज़ी की दुआ की। रिवायत किया जाता है कि जब उन्होंने यह दुआ की तो अल्लाह तआला ने जिब्रील को हुक्म दिया कि वे शाम से ताइफ़ के शहर को उखाड़ लें, फिर उन्होंने उसे एक हफ़्ते तक काबा के गिर्द घुमाया, इसी वजह से उसे ताइफ़ कहा जाता है। इसके बाद उन्होंने उसे तिहामा में ला कर रख दिया। मक्का और उसके आस-पास का इलाक़ा उस वक़्त पानी और नबातात से ख़ाली एक सहारा था। अल्लाह तआला ने उसके गिर्दो-नवाह के इलाक़ों को, जैसे ताइफ़ और दूसरे मक़ामात को, बरकत अता फ़रमाई, चुनाँचे वहाँ नबातात उग आई।

Scholars disagree about whether Makkah became a *haram* by Ibrāhīm's

उलमा के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि क्या मक्का हज़रत इब्राहीम की दुआ से हरम बना या

~~~~~

supplication or whether it was one before that. One view is that it has always been a ḥaram, protected from tyrants, earthquakes and other such things that happen to other lands. Rebellious people feel respect for it so that its people alone enjoy security. In it Allah has placed the great symbol of His Unity. Its special status is shown by game which go into it. Dogs and game meet in it and the dogs do not attack the game. But, when the game animal leaves the ḥaram, the dogs run after it. Ibrāhīm asked his Lord to protect it from drought, famine and attacks and to provide its people with fruits. He did not, as some people think, refer to shedding blood in it when that was necessary. That was not what he intended so that someone might say that he asked Allah to forbid the killing of those who sought refuge in it. This is very unlikely.

उससे पहले ही हरम था। एक राय यह है कि वह हमेशा से हरम रहा है—ज़ालिमों, ज़लज़लों और इस तरह की दूसरी आफ़ात से महफूज़, जो दूसरी सरज़मीनों में पेश आती हैं। सरकश लोग भी उसके लिए दिल में एहताराम महसूस करते हैं, यहाँ तक कि उसके रहने वाले ही अमन से रहते हैं। उसी में अल्लाह तआला ने अपनी तौहीद की अज़ीम निशानी रखी है। इसकी ख़ुसूसियत इस तरह भी ज़ाहिर होती है कि शिकार के जानवर इसमें दाख़िल हो जाते हैं; कुत्ते और शिकार एक जगह होते हैं, मगर कुत्ते शिकार पर हमला नहीं करते। लेकिन जब शिकार हरम से बाहर निकलता है तो कुत्ते उसके पीछे दौड़ पड़ते हैं। हज़रत इब्राहीम ने अपने रब से दुआ की कि वह उसे क़हत, भूख और हमलों से महफूज़ रखे और उसके रहने वालों को फलों से रोज़ी अता फ़रमाए। उनकी मुराद—जैसा कि कुछ लोग समझते हैं—यह नहीं थी कि वहाँ ख़ून बहाने को मुतलक़न ममनूअ क़रार दिया जाए, जबकि कुछ मौक़ों पर वह नागुज़ीर हो सकता था। यह उनका मक़सूद नहीं था कि कोई यह कहे कि उन्होंने अल्लाह से पनाह लेने वालों के

	<p>क़ल्ल को हराम करने की दुआ की। यह बात निहायत बर्ईद है।</p>
<p>The second view is that it was not a ḥaram before the prayer of Ibrāhīm and was like any other place and that it only became a ḥaram when he made his supplication, as Madīnah became one when the Messenger of Allah ﷺ made it one. The people of the first position use as evidence the hadith of Ibn ‘Abbās in which the Messenger of Allah ﷺ said on the Day of the Conquest, ‘This city (Makkah) was made a ḥaram the day when Allah created the heavens and the earth and so will remain sacred by Allah’s making it sacred until the Day of Rising. It was not lawful for anyone to fight in it before me and it was only lawful for me for one hour of one day. It will remain sacred because Allah has made it so until the Day of Rising. Its thorns should not be cut, its game should not be hunted and something dropped should not be picked except by someone</p>	<p>दूसरी राय यह है कि हज़रत इब्राहीम की दुआ से पहले मक्का हरम नहीं था, बल्कि दूसरे मक़ामात की तरह एक आम जगह था, और वह उसी वक़्त हरम बना जब उन्होंने दुआ की—जैसे मदीना उस वक़्त हरम बना जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे हरम करार दिया। पहली राय के क़ायल इब्र-ए-अब्बास की उस हदीस को दलील बनाते हैं जिसमें रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़तह के दिन फ़रमाया: “इस शहर (मक्का) को अल्लाह ने उसी दिन हरम करार दिया जिस दिन उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और यह अल्लाह के हरम करार देने से क़ियामत के दिन तक हरम ही रहेगा। मुझ से पहले किसी के लिए इसमें क़िताल हलाल नहीं था, और मेरे लिए भी एक दिन की एक घड़ी के सिवा हलाल नहीं किया गया। यह क़ियामत के दिन तक अल्लाह के हरम करार देने की वजह से हरम ही रहेगा। इसके काँटे न काटे जाएँ, इसका शिकार न किया जाए, और गिरी पड़ी चीज़ न उठाई जाए, मगर वह शख़्स जो उसका एलान करे।” इब्र-ए-अब्बास ने कहा: “ऐ अल्लाह</p>

~~~~~

who announces that he has found it.’ Ibn ‘Abbās said, ‘Messenger of Allah, except for idhkhir-herb for our goldsmiths and houses.’ He said, ‘Except for idhkhir-herb.’ Muslim and others transmitted something similar from Shurayḥ.

के रसूल! मगर इज़्ज़िर घास, क्योंकि वह हमारे सुनारों और घरों के काम आती है।” आपने ﷺ फ़रमाया: “इज़्ज़िर घास के सिवा।” मुस्लिम और दूसरे मुहद्दिसीन ने शुरैह से भी इसी मफ़हूम की रिवायत नक़ल की है।

In *Ṣaḥīḥ Muslim*, ‘Abdullāh ibn Zayd ibn ‘Āṣim reported that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘Ibrāhīm made Makkah a ḥaram and prayed for its people. I made Madīnah a ḥaram as Ibrāhīm made Makkah a ḥaram and I prayed for its ṣā’ and mudd in the same way that Ibrāhīm prayed for the people of Makkah.’ Ibn ‘Atīyyah said that there is no conflict between the two hadiths because the first one reports about the prior knowledge and decree of Allah for it and that it was sacred in the time of Ādam and the time when those with belief lived there, and the second reported about Ibrāhīm renewing its inviolability after it had fallen

सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “इब्राहीम ने मक्का को हरम करार दिया और उसके रहने वालों के लिए दुआ की, और मैंने मदीना को हरम करार दिया—जैसे इब्राहीम ने मक्का को हरम करार दिया था—और मैंने उसके साअ और मुद्द के लिए उसी तरह दुआ की जैसे इब्राहीम ने मक्का के लोगों के लिए दुआ की थी।” इब्न-ए-अतिय्या ने कहा कि इन दोनों अहादीस में कोई तआरुज़ नहीं है, क्योंकि पहली हदीस इस बात की ख़बर देती है कि अल्लाह तआला का उसके बारे में पहले से इल्म और फ़ैसला था, और यह कि वह आदम के ज़माने में भी हरम था और उस वक़्त भी जब वहाँ अहल-ए-ईमान आबाद थे; जबकि दूसरी हदीस इस बात की ख़बर देती

~~~~~

away. The first statement of the Prophet ﷺ reports about the huge importance of the inviolability of Makkah for the believers by making that inviolability go back to Allah. Mentioning Ibrāhīm when he made Madīnah a ḥaram is providing a model. It is not impossible that the inviolability of Madīnah also came from Allah, and was the carrying out of His Decree and by His prior knowledge. At-Ṭabarī said, ‘Makkah was a ḥaram, but Allah did not make people worship by that until Ibrāhīm asked him for it and so He made it inviolable.’

है कि इब्राहीम ने उसकी हुरमत को उसके ज़ाइल हो जाने के बाद दुबारा क़ायम किया। नबी ﷺ का पहला इरशाद अहल-ए-ईमान के लिए मक्का की हुरमत की अज़ीम अहमियत को बयान करता है, क्योंकि इस हुरमत को अल्लाह तआला की तरफ़ मंसूब किया गया है। और मदीना को हरम करार देने में इब्राहीम का ज़िक्र एक नमूने के तौर पर है। इसमें कोई बर्द बात नहीं कि मदीना की हुरमत भी अल्लाह तआला ही की तरफ़ से हो, और उसके फ़ैसले और उसके साबिक़ इल्म के मुताबिक़ हो। इमाम तबरी ने कहा: “मक्का तो हरम था, लेकिन अल्लाह तआला ने लोगों पर उसकी ताज़ीम को लाज़िम नहीं किया था, यहाँ तक कि इब्राहीम ने उसके लिए दुआ की, तो अल्लाह तआला ने उसे (अमलन) हरम और मुहतरम करार दे दिया।”

He said, ‘I will let anyone who becomes an unbeliever enjoy himself a little

उसने फ़रमाया: “और जो कुफ़र करेगा, मैं उसे थोड़ी मुद्दत तक फ़ायदा उठाने दूँगा।”

Scholars disagree about whether this statement was made by Ibrāhīm or Allah. Ubayy ibn Ka‘b, Ibn Ishāq and others said, ‘That is from Allah

उलमा के दरमियान इस बात में इख़िलाफ़ है कि यह जुमला हज़रत इब्राहीम का है या अल्लाह तआला का। उबय्य बिन काब, इब्र-ए-इस्हाक़ और दूसरे हज़रात ने कहा

Almighty'. Six readings have *umatti'uhu* ('I will let enjoy') while Ibn 'Āmir has *numatti'uh* ('We will let enjoy') as well as 'We will drive him'. Ibn 'Abbās, Mujāhid and Qatādah said that the statement was made by Ibrāhīm. They read it as *amti'hu* in the imperative, and so it is a supplication made by Ibrāhīm against them: 'Let him enjoy...' Ibn 'Abbās said, 'Ibrāhīm prayed for those who believed in particular and Allah informed him that He would provide for those who disbelieved as well as those who believed and that He would let them enjoy themselves a little and then force them to the punishment of the Fire.' Abū Ja'far said that Allah says: 'We sustain each one, the former and the latter, through the generous giving of your Lord' (17:20) and He also says: 'There are nations to whom We will give enjoyment.' (11:48) Abū Ishāq said, 'Ibrāhīm knew that there would be unbelievers among

कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से है। छह क़िराअतों में उमत्तिअुहू ("मैं फ़ायदा उठाने दूँगा") आया है, जबकि इब्न-ए-आमिर की क़िराअत में नुमत्तिअुहू ("हम फ़ायदा उठाने देंगे") और इसी तरह "हम उसे धकेल देंगे" के अल्फ़ाज़ आए हैं। इब्न-ए-अब्बास, मुजाहिद और क़तादा ने कहा कि यह जुमला हज़रत इब्राहीम का है। उन्होंने इसे अम्र के सिग़े अम्तिअुहू के साथ पढ़ा है, लिहाज़ा यह काफ़िरों के बारे में हज़रत इब्राहीम की तरफ़ से बद्दुआ (या इल्ज़ामी दुआ) है: "उसे थोड़ी मुद्दत फ़ायदा उठाने दे ..." इब्न-ए-अब्बास ने कहा: हज़रत इब्राहीम ने ख़ास तौर पर ईमान वालों के लिए दुआ की, तो अल्लाह तआला ने उन्हें ख़बर दी कि वह काफ़िरों को भी रोज़ी देगा जैसे मोमिनों को देता है, और उन्हें थोड़ी मुद्दत फ़ायदा उठाने देगा, फिर उन्हें आग के अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर देगा। अबू जाफ़र ने कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "हम हर एक को मदद देते हैं—पहलों को भी और पछलों को भी—तुम्हारे रब की बख़्शिश से" (17:20), और यह भी फ़रमाया: "और कुछ क़ौमों ऐसी हैं

his descendants and so he singled out the believers.’

जिन्हें हम दुनिया में फ़ायदा उठाने देंगे” (11:48)। अबू इस्हाक़ ने कहा: हज़रत इब्राहीमं जानते थे कि उनकी औलाद में काफ़िर भी होंगे, इसी लिए उन्होंने ईमान वालों को अलग करके ज़िक्र किया।

And when Ibrāhīm laid the foundations of the House with Ismā‘il: ‘Our Lord, accept this from us! You are the All-Hearing, the All-Knowing. [2:127]

और जब इब्राहीमं इस्माइलं के साथ बैतुल्लाह की बुनियादें उठा रहे थे तो (उन्होंने कहा): “ऐ हमारे रब! हम से इसे क़बूल फ़रमा ले। बेशक तू ही ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है।” [2:127]

The word *qawā'id* (foundations) mentioned here is the subject of some discussion. Abū ‘Ubaydah and al-Farrā’ say it means foundations but al-Kisā’ī says it means walls. Its usual meaning, however, is foundations. In a report we find: ‘When the House was demolished, huge stones from it were brought, and Ibn Az-Zubayr said, “These are the foundations (*qawā'id*) which Ibrāhīm laid.”’ It is said that the foundations had been demolished and Allah informed Ibrāhīm about them. Ibn ‘Abbās said, ‘The House was

शब्द क़वाइद जिसका यहाँ ज़िक्र आया है, उसके मानी के बारे में कुछ बहस पाई जाती है। अबू उबैदा और फ़र्राअ कहते हैं कि इससे मुराद बुनियादें हैं, जबकि किसाई कहते हैं कि इससे मुराद दीवारें हैं। हालांकि इसका मशहूर और आम मानी बुनियादें ही है। एक रिवायत में आता है: “जब बैतुल्लाह को मुनहदिम किया गया तो उसके बड़े-बड़े पत्थर लाए गए, तो इब्न-ए-जुबैर ने कहा: ‘ये वही बुनियादें (क़वाइद) हैं जो इब्राहीमं ने रखी थीं।” यह भी कहा गया है कि बुनियादें मिट चुकी थीं और अल्लाह तआला ने इब्राहीमं को उनकी ख़बर दी। इब्न-ए-अब्दुल्लाह ने कहा: “बैतुल्लाह ऐसी बुनियादों पर

~~~~~

set on foundations which existed a thousand years before this world was created.' The singular of *qawā'id* is *qā'idah*.

क्रायम किया गया था जो इस दुनिया की पैदाइश से एक हज़ार साल पहले मौजूद थीं।" क़वाइद का वाहिद क़ाइदा है।

People disagree about who first built the House and its foundations. It is said that it was the angels. It is related that Ja'far ibn Muḥammad said, 'While I was present, my father was asked about the initial creation of the House. He said, "When Allah said, *I am putting a caliph on the earth*' (2:30), the angels said, *Why put on it one who will cause corruption on it and shed blood when we glorify You with praise and proclaim Your purity?*' He became angry with them and they sought refuge with His Throne and circled it seven times, seeking to please their Lord so that He might be pleased with them. He told them, 'Build for Me a House on the earth at which those of the sons of Adam with whom I am angry might seek refuge and circumambulate it as you did of my Throne. I will be

लोगों के दरमियान इस बात में इख़िलाफ़ है कि सबसे पहले बैतुल्लाह और उसकी बुनियादें किसने बनाई थीं। कहा जाता है कि उसे फ़रिश्तों ने बनाया था। रिवायत है कि जाफ़र बिन मुहम्मद ने कहा: "मेरी मौजूदगी में मेरे वालिद से बैतुल्लाह की इब्तिदाई तख़लीक़ के बारे में पूछा गया। उन्होंने कहा: 'जब अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ" (2:30), तो फ़रिश्तों ने कहा: "क्या आप उसमें ऐसे को रखेंगे जो उसमें फ़साद फैलाएगा और खून बहाएगा, जबकि हम आपकी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और आपकी पाकी बयान करते हैं?" तो अल्लाह तआला उन पर नाराज़ हुआ। फिर उन्होंने उसके अर्श की पनाह ली और उसे सात बार तवाफ़ किया, अपने रब को राज़ी करने के लिए ताकि वह उनसे राज़ी हो जाए। तब अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया: "मेरे लिए ज़मीन पर एक घर बनाओ, जिसके पास बनी आदम में से वे लोग पनाह लें जिनसे

~~~~~

~~~~~

|                                                                                |                                                                                                                                                                                |
|--------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>pleased with them as I am pleased with you.’ So they built this House.”</p> | <p>मैं नाराज़ होता हूँ, और वे उसका तवाफ़ करें जैसे तुमने मेरे अर्श का तवाफ़ किया। फिर मैं उनसे उसी तरह राज़ी हो जाऊँगा जैसे तुमसे राज़ी हूँ।” पस उन्होंने यह घर बना दिया।”</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>‘Abd ar-Razzāq mentioned from Ibn Jurayj from ‘Aṭā’, Ibn al-Musayyab and others that they reported that Allah revealed to Ādam, “When you go down to the earth, build me a House. Then go around it as you saw the angels going around My Throne in heaven.” ‘Aṭā’ said, “People claim that it was built from five mountains: Ḥirā’, Sinai, Lebanon, al-Jūdī and Mt. Zaytā. Its <i>rubd</i> was from Ḥirā’.” Al-Khalīl said that the meaning <i>rubd</i> in this context is the circular foundation of the House which is made of stone. One also calls the outskirts of Madīnah <i>rubd</i>.</p> | <p>अब्दुर्रज़ाक़ ने इब्न-ए-जुरैज के ज़रिये अता, इब्न-ए-मुसैय्यब और दूसरे हज़रात से नक़ल किया है कि उन्होंने रिवायत किया कि अल्लाह तआला ने आदम की तरफ़ व्ह्य फ़रमाई: “जब तुम ज़मीन पर उतरो तो मेरे लिए एक घर बनाना, फिर उसका तवाफ़ करना, जैसे तुमने आसमान में फ़रिशतों को मेरे अर्श का तवाफ़ करते देखा है।” अता ने कहा: “लोगों का कहना है कि यह घर पाँच पहाड़ों के पत्थरों से बनाया गया था: हिरा, तूर-ए-सीना, लुबनान, जूदी और जबल-ए-ज़ैता। उसका रुब्द हिरा से था।” अल-खलील ने कहा कि यहाँ रुब्द से मुराद बैतुल्लाह की वह गोल बुनियाद है जो पत्थर से बनी होती है। मदीना के आस-पास के इलाक़ों को भी रुब्द कहा जाता है।</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                    |                                                                                                                                 |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>Al-Māwardī mentioned from ‘Aṭā’ that Ibn ‘Abbās said, “When Ādam descended to earth from the Garden, he was</p> | <p>अल-मावर्दी ने अता के ज़रिये नक़ल किया है कि इब्न-ए-अब्बास ने कहा: “जब आदम जन्नत से ज़मीन पर उतारे गए तो उनसे कहा गया: ‘ऐ</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

told, ‘Ādam, go and build a House for Me. Circumambulate it and remember Me at it as you saw the angels doing around My Throne.’” Ādam went forward and traversing the earth was shortened for him. Every place on which his foot fell flourished until he reached the site of the Sacred House. Jibrīl was striking the earth with his wings and uncovered a firm foundation on the ground of the lowest earth. The angels threw stones to him and one of the stones could not be lifted by thirty men.’ He built it from five mountains as we mentioned.

आदम! जाकर मेरे लिए एक घर बनाओ, उसका तवाफ़ करो और वहाँ मेरा ज़िक्र करो, जैसे तुमने फ़रिश्तों को मेरे अर्श के गिर्द करते देखा है।” चुनाँचे आदमं रवाना हुए और उनके लिए ज़मीन की मसाफ़त मुख़्तसर कर दी गई। जिस जगह भी उनका क़दम पड़ता, वह आबाद हो जाती, यहाँ तक कि वे बैत-ए-हराम की जगह तक पहुँच गए। जिब्रीलं ज़मीन पर अपने पंखों से ज़र्ब लगाते थे और निचली ज़मीन की सतह पर एक मज़बूत बुनियाद ज़ाहिर हो गई। फ़रिश्ते उनके पास पत्थर लाकर डालते थे, और उनमें से एक पत्थर ऐसा था जिसे तीस आदमी भी न उठा सके। आदमं ने उसे पाँच पहाड़ों के पत्थरों से बनाया, जैसा कि पहले ज़िक्र किया गया।

It is related in some reports that Ādam brought down one of the tents of the Garden and set it up at the site of the Ka‘bah so that he could live in it and circumambulate it. It remained there until Allah took Ādam and then it was removed. This is reported from Wahb ibn Munabbih. One version has: ‘A

कुछ रिवायात में आया है कि आदमं जन्नत का एक ख़ैमा (तंबू) अपने साथ उतार लाए और उसे काबा की जगह पर क़ायम किया, ताकि वे उसमें रह सकें और उसका तवाफ़ कर सकें। वह वहीं मौजूद रहा, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आदमं को उठा लिया, फिर उसे हटा लिया गया। यह वहब बिन मुनब्बिह से मर्वी है। एक रिवायत में है: “उनके साथ एक घर

House came down with him, and he did *tawāf* of it as did his believing children. That was how it was until the time of the Flood. Then Allah removed it to heaven. It is what is called “the Inhabited House”.’ This is related from Qatādah. Al-Ḥalīmī mentioned it in *Kitāb minhāj ad-dīn*. He said, ‘It is possible that what Qatādah said about it descending with him was the measure of the Inhabited House in height, width and thickness. Then he was told to build according to those measurements and to position it opposite it. So the position of the Ka’bah is opposite it and he built it there. As for the tent, it could have descended and been set up in the location of the Ka’bah. When he was commanded to build it, he built it and it was around the Ka’bah, giving peace of mind to Ādam as long as he lived. Then it was removed.’ So these reports agree. This was the building of Ādam and then Ibrāhīm rebuilt

उतरा, और उन्होंने उसका तवाफ़ किया, जैसे उनकी ईमान वाली औलाद करती थी। यह हाल क़यामत-ए-तूफ़ान तक रहा। फिर अल्लाह तआला ने उसे आसमान की तरफ़ उठा लिया। वही है जिसे ‘अल-बैतुल-मअमूर’ कहा जाता है।” यह क़तादा से रिवायत किया गया है। अल-हलीमी ने इसे *किताब मिन्हाजुद्दीन* में ज़िक्र किया है। उन्होंने कहा: “यह मुमकिन है कि क़तादा का यह कहना कि वह उसके साथ उतरा, दरअसल अल-बैतुल-मअमूर की ऊँचाई, चौड़ाई और मोटाई के माप के उतरने की तरफ़ इशारा हो। फिर आदम को हुक्म दिया गया कि उन्हीं मापों के मुताबिक़ तामीर करें और उसे उसके मुक़ाबिल क़ायम करें। इस तरह काबा की जगह उसके सामने है और उन्होंने वहीं उसे बनाया। जहाँ तक ख़ैमे का ताल्लुक़ है, तो मुमकिन है कि वह उतर आया हो और काबा की जगह पर क़ायम कर दिया गया हो। जब उन्हें घर बनाने का हुक्म मिला तो उन्होंने उसे बना दिया और वह काबा के चारों तरफ़ था, जो आदम के ज़िंदा रहने तक उनके लिए इम्तिनान का सबब रहा। फिर उसे उठा लिया गया।” इस तरह ये तमाम रिवायात

it.

आपस में मुत्तफ़िक़ हो जाती हैं। यह आदमं की तामीर थी, फिर इब्राहीमं ने उसे दुबारा तामीर किया।

It is related from 'Alī ibn Abī Tālib that when Allah commanded Ibrāhīm to build the House, he set out from Syria with his son Ismā'īl and Ismā'īl's mother Hajar. The *Sakīnah* was sent with him with a tongue by which it spoke. Ibrāhīm went with it morning and evening until it brought him to Makkah. Then it told Ibrāhīm, 'Build the foundation where I am.' He and Ismā'īl raised the House until it reached the height of the Corner. He told his son, 'My son, look for a stone to set in place as a marker for people.' He brought a stone, but he did not like it and said, 'Look for another.' He began to look and brought it but he had already brought the corner stone and put it in its place. He asked, 'Father, who brought you this stone?' He answered, 'One who was not letting me rely on

हज़रत अली बिन अबी तालिबं से रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीमं को बैतुल्लाह बनाने का हुक्म दिया तो वे शाम से अपने बेटे इस्माइलं और इस्माइलं की वालिदा हाजरां के साथ रवाना हुए। उनके साथ सकीना भी भेजी गई, जिसे एक ज़बान दी गई थी जिसके ज़रिये वह कलाम करती थी। हज़रत इब्राहीमं सुबह और शाम उसके साथ चलते रहे, यहाँ तक कि वह उन्हें मक्का ले आईं। फिर उसने हज़रत इब्राहीमं से कहा: "यहीं बुनियाद रखो जहाँ मैं हूँ।" चुनाँचे हज़रत इब्राहीमं और हज़रत इस्माइलं ने बैतुल्लाह की तामीर उठाई, यहाँ तक कि वह रुक्न (कोने) की बुलंदी तक पहुँच गई। इस पर हज़रत इब्राहीमं ने अपने बेटे से कहा: "बेटे! लोगों के लिए निशानी के तौर पर रखने के लिए एक पत्थर तलाश करो।" वे एक पत्थर ले आए, मगर हज़रत इब्राहीमं को वह पसंद न आया और फ़रमाया: "कोई और तलाश करो।" हज़रत इस्माइलं तलाश में लग गए और

you.’

एक और पत्थर ले आए, लेकिन इस दौरान हज़रत इब्राहीमं के पास रुक्न का पत्थर आ चुका था और वे उसे उसकी जगह पर नसब कर चुके थे। हज़रत इस्माईलं ने पूछा: “अब्बा जान! यह पत्थर आपके पास कौन लाया?” हज़रत इब्राहीमं ने जवाब दिया: “उसने, जिसने मुझे तुम पर भरोसा करने नहीं दिया।”

Ibn ‘Abbās reported that [Mount] Abū Qubays said, ‘Ibrāhīm! Friend of the All-Merciful! You have a deposit with me. Take it.’ It was a white stone from the rubies of the Garden. Ādam brought it down with me from the Garden. When Ibrāhīm and Ismā‘īl raised the foundations of the House, a square cloud with a face came and called out: ‘Raise it on my square.’ This is the structure of Ibrāhīm.

इब्र-ए-अब्बास से रिवायत है कि (पहाड़) अबू कुबैस ने कहा: “ऐ इब्राहीम! ऐ रहमान के खलील! मेरे पास तुम्हारी एक अमानत है, उसे ले लो।” वह जन्नत के याकूतों में से एक सफ़ेद पत्थर था, जिसे आदमं मेरे साथ जन्नत से लाए थे। जब इब्राहीमं और इस्माईलं बैतुल्लाह की बुनियादें उठा रहे थे तो एक चौकोर शकल का बादल, जिसका एक चेहरा था, ज़ाहिर हुआ और पुकार कर कहा: “इसे मेरे चौकोर पर उठाओ।” यही इब्राहीमं की तामीर है।

It is related that when Ibrāhīm and Ismā‘īl finished building the House, Allah gave them horses as a reward for raising the foundations of the House. Al-Hakīm at-Tirmidhī related from ‘Umar ibn Abī ‘Umar

रिवायत में आता है कि जब इब्राहीमं और इस्माईलं ने बैतुल्लाह की तामीर मुकम्मल कर ली तो अल्लाह तआला ने उन्हें उसके बदले घोड़े अता फ़रमाए, जो बैतुल्लाह की बुनियादें उठाने का अज़्र थे। अल-हकीम अत-तिर्मिज़ी ने उमर बिन

from Nu‘aym ibn Ḥammād from ‘Abd al-Wahhāb ibn Hammām, the brother of ‘Abd ar-Razzāq from Ibn Jurayj from Ibn Abī Mulaykah that Ibn ‘Abbās said, ‘Horses were wild like other wild animals. When Allah allowed Ibrāhīm and Ismā‘īl to raise the foundations, Allah Almighty said, “I will give you a treasure that I have stored up for you.” Then He revealed to Ismā‘īl: “Go out to Ajyad and call. Your treasure will come to you.” He went to Ajyad which was a dwelling, not knowing what the supplication was nor what the treasure was. He inspired him and there was no horse on the face of the earth in the land of the Arabs that did not come to him. He was able to take their forelocks and they were subject to him. He rode them and foddered them. They are good fortune and the legacy of your father Ismā‘īl. They are called “faras” [whose root means “perception”] in Arabic because Ismā‘īl was

अबी उमर के वासिते से, वह नुऐम बिन हम्माद से, वह अब्दुल-वहहाब बिन हम्माम (जो अब्दुर्रज़्ज़ाक के भाई थे) से, वह इब्न-ए-जुरैज से, वह इब्न-ए-अबी मुलैका से रिवायत किया है कि इब्न-ए-अब्बास ने कहा: “घोड़े दूसरे जंगली जानवरों की तरह वहशी थे। जब अल्लाह तआला ने इब्राहीम और इस्माईल को बैतुल्लाह की बुनियादें उठाने की तौफ़ीक दी तो अल्लाह अज़्ज़ो-जल्ल ने फ़रमाया: ‘मैं तुम्हें एक खज़ाना दूँगा जो मैंने तुम्हारे लिए जमा कर रखा है।’ फिर उसने इस्माईल की तरफ़ व्ह्य की: ‘अज्याद की तरफ़ जाओ और पुकारो, तुम्हारा खज़ाना तुम्हारे पास आ जाएगा।’ वह अज्याद की तरफ़ गए, जो उस वक़्त एक आबादी थी; न उन्हें मालूम था कि यह दुआ क्या है और न यह कि वह खज़ाना क्या है। फिर अल्लाह ने उन्हें इल्हाम किया, और अरब की सरज़मीन में रू-ए-ज़मीन पर कोई घोड़ा ऐसा न रहा जो उनके पास न आ गया। वे उनकी पेशानियाँ (ऐयाल) पकड़ने लगे और घोड़े उनके ताबे हो गए। वे उन पर सवार हुए और उन्हें चारा डालने लगे। ये घोड़े ख़ैर व बरकत हैं और तुम्हारे बाप इस्माईल की मीरास हैं। उन्हें

~~~~~

|                                                            |                                                                                                                                                                       |
|------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>commanded to make supplication and it came to him.’</p> | <p>अरबी में ‘फ़रस’ कहा जाता है, क्योंकि इसका मादा फ़हम व इद्राक़ पर दलालत करता है, इसलिए कि इस्माईल को दुआ करने का हुक्म दिया गया और वह (खज़ाना) उनके पास आ गया।”</p> |
|------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>‘Abd al-Mun‘im ibn Idrīs related that Wahb ibn Munabbih said, ‘Shīth was the first to build using mud and stones. The structures of Quraysh are known and the report about the serpent in connection with that has been mentioned. It stopped them from destroying it until Quraysh gathered at the Maqām and cried out, “Our Lord! Do not be alarmed! We want to honour and adorn Your House if You are pleased with that. Otherwise do what seems best to You!” They heard the sound of the wings of a heavy bird in the sky and saw a bird larger than an eagle with a black back and white belly and two legs. It sunk its talons in the neck of the serpent and then left with it while its tail was</p> | <p>अब्दुल-मुनइम बिन इदरीस ने रिवायत किया कि वहब बिन मुनब्बिह ने कहा: “शीस वह पहले शख्स थे जिन्होंने मिट्टी और पत्थरों से तामीर की। कुरैश की तामीरात मशहूर हैं, और इस सिलसिले में साँप का जो वाक़िआ है वह पहले बयान किया जा चुका है। उस साँप ने उन्हें (बैतुल्लाह को गिराने से) रोके रखा था, यहाँ तक कि कुरैश मक़ाम (इब्राहीम) पर जमा हुए और पुकार कर कहा: ‘ऐ हमारे रब! हम तुझे नाराज़ नहीं करना चाहते। हम तो सिर्फ़ तेरे घर की ताज़ीम और उसकी आराइश करना चाहते हैं, अगर तू इस पर राज़ी है। वरना जो तुझे मुनासिब लगे वही कर!’ तब उन्होंने आसमान में एक भारी परिंदे के परों की आवाज़ सुनी और एक ऐसा परिंदा देखा जो उक्राब से भी बड़ा था। उसकी पीठ काली और पेट सफ़ेद था और उसके दो पाँव थे। उसने अपने पंजे साँप की गर्दन में गाड़ दिए, फिर</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

~~~~~

|                                                                              |                                                                                                  |
|------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>dragging, being greater than such-and-such and took it towards Ajjad.</p> | <p>उसे उठा कर ले उड़ा, इस हाल में कि उसकी दुम घिसट रही थी, और वह उसे अज्याद की तरफ़ ले गया।”</p> |
|------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>‘So Quraysh demolished it and began to rebuild it with the stones of the wadi which Quraysh carried on their backs. They raised it upwards to the level of twenty cubits. The Prophet ﷺ was carrying stones from Ajjad. He was wearing a striped garment and it was tight on him. He went to put the garment on his shoulder and his private parts could be seen because of the smallness of the garment. There was a call: “Muhammad! Cover your private parts!” He was not seen naked after that.’ There were five years between building the Ka’bah and the descent of Revelation and fifteen years between his leaving and its rebuilding. ‘Abd ar-Razzāq mentioned it from Ma’mar from ‘Abdullāh ibn ‘Uthmān from Abū-t-Ṭufayl.</p> | <p>रिवायत में आता है: “चुनाँचे कुरैश ने उसे मुनहदिम किया और वादी के पत्थरों से उसकी दोबारा तामीर शुरू की, जिन्हें कुरैश अपनी पीठों पर उठा कर लाते थे। उन्होंने उसे ऊपर की तरफ़ बीस हाथ की बुलंदी तक उठाया। नबी ﷺ अज्याद से पत्थर उठा कर लाते थे। आपने ﷺ धारियों वाली चादर पहन रखी थी जो आप पर तंग थी। जब आपने ﷺ उसे अपने कंधे पर रखने की कोशिश की तो चादर की तंगी की वजह से आपकी सतरगाह ज़ाहिर होने लगी। उसी वक़्त एक आवाज़ आई: ‘ऐ मुहम्मद! अपनी सतर ढाँप लो!’ इसके बाद आप ﷺ कभी बरहना नहीं देखे गए।” यह वाक़िआ काबा की तामीर और नुज़ूल-ए-वह्य के दरमियान पाँच साल का फ़ासिला था, और आप ﷺ की रवानगी और उसकी दुबारा तामीर के दरमियान पंद्रह साल का। अब्दुरज़ज़ाक़ ने इसे मअमर के वासिते से, वह अब्दुल्लाह बिन उस्मान से, और वह अबू-त-तुफ़ैल से नक़ल किया है।</p> |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                    |                                     |
|------------------------------------|-------------------------------------|
| <p>It is mentioned from Ma’mar</p> | <p>मअमर ने जुहरी से रिवायत किया</p> |
|------------------------------------|-------------------------------------|

~~~~~

from az-Zuhrī: ‘When they had built it and reached the place of the Cornerstone, Quraysh argued about the Cornerstone and which tribe should raise it and it became an open quarrel. They said, “Let the first one who comes to us from that door be the arbiter between us!” They agreed on that and the Messenger of Allah ﷺ, who was a young man wearing a striped garment, entered and they had him judge. He commanded that the stone be placed on a robe and then told the leader of each tribe to take a corner of the robe. They raised it up and the Prophet ﷺ put it in place.’

है: “जब कुरैश ने बैतुल्लाह की तामीर मुकम्मल कर ली और हजर-ए-असवद की जगह तक पहुँच गए तो हजर-ए-असवद के बारे में कुरैश के दरमियान झगड़ा हो गया कि कौन-सा क़बीला उसे उसकी जगह नस्ब करेगा, यहाँ तक कि बात खुले नज़ा तक पहुँच गई। फिर उन्होंने कहा: ‘उस दरवाज़े से जो सबसे पहले हमारे पास आए, हम उसे अपने दरमियान हकम मान लेंगे।’ चुनाँचे वे इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए। इसी अस्त्रा में रसूलुल्लाह ﷺ—जो उस वक़्त एक नौजवान थे और धारियों वाली चादर पहने हुए थे—अंदर दाख़िल हुए, तो उन्होंने आपको फ़ैसला करने वाला बना लिया। आपने ﷺ हुक्म दिया कि हजर-ए-असवद को एक चादर पर रखा जाए, फिर हर क़बीले के सरदार को हुक्म दिया कि वह चादर का एक-एक किनारा पकड़ ले। सब ने मिलकर उसे ऊपर उठाया, फिर नबी ﷺ ने अपने दस्त-ए-मुबारक से उसे उसकी जगह पर नस्ब कर दिया।”

Ibn Ishāq said: ‘I was told that Quraysh found a document written in Syriac in a corner. They could not understand it until a Jewish man came and

इब्र-ए-इस्हाक़ ने कहा: “मुझे बताया गया कि कुरैश ने काबा के एक कोने में सुरयानी ज़बान में लिखी हुई एक तहरीर पाई। वे उसे समझ न सके, यहाँ तक कि एक यहूदी आदमी

read it for them. It said: "I am Allah, the Lord of Bakkah. I created it on the day that I created the heavens and the earth, and formed the sun and moon, and I surrounded it with seven pure angels. It will remain as long as its two mountains remain, a blessing to its people with water and milk." Abū Ja'far Muḥammad ibn 'Alī said, 'In the time of the Amalekites, Jurhum and Ibrāhīm, the door of the Ka'bah was on the ground until Quraysh rebuilt it.' Muslim transmitted that 'Ā'ishah said, 'I asked the Messenger of Allah ﷺ whether the wall was part of the House. "Yes," he answered. I asked, "Then why do they not include it in the House?" He said, "Your people did not have sufficient funds." I asked, "Why is its door elevated?" He said, "Your people did that so that they could admit whomever they wished and deny whomever they wished. If it had not been that your people were very

आया और उसने उसे पढ़कर सुनाया। उसमें लिखा था: 'मैं अल्लाह हूँ, बक्का का रब। मैंने इसे उसी दिन पैदा किया जिस दिन मैंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और सूरज और चाँद को बनाया, और मैंने इसे सात पाक फ़रिश्तों से घेर दिया। यह उस वक़्त तक बाक़ी रहेगा जब तक इसके दोनों पहाड़ बाक़ी रहेंगे, और यह अपने रहने वालों के लिए पानी और दूध के साथ बरकत का सबब होगा।'" अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली ने कहा: "अमालिका, जुरहुम और इब्राहीम के ज़माने में काबा का दरवाज़ा ज़मीन की सतह पर था, यहाँ तक कि कुरैश ने उसे दुबारा तामीर किया।" मुस्लिम ने रिवायत किया है कि हज़रत आइशा ने कहा: "मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कि क्या (हतीम की) दीवार बैतुल्लाह का हिस्सा है?" आपने ﷺ फ़रमाया: 'हाँ।' मैंने अर्ज़ किया: 'फिर लोग उसे बैतुल्लाह में शामिल क्यों नहीं करते?' आपने ﷺ फ़रमाया: 'तुम्हारी क़ौम के पास इतना माल न था।' मैंने पूछा: 'उसका दरवाज़ा ऊँचा क्यों बनाया गया है?' आपने ﷺ फ़रमाया: 'यह तुम्हारी क़ौम ने इस लिए किया ताकि जिसे चाहें अंदर आने दें और जिसे

~~~~~

recently in the time of the Jāhiliyyah and I feared that their hearts would be averse, I would have incorporated the wall into the House and brought the door down to the ground.”

चाहें रोक दें। अगर यह बात न होती कि तुम्हारी क़ौम अभी-अभी जाहिलियत के ज़माने से निकली है और मुझे अंदेशा था कि उनके दिल मुतनफ़िर हो जाएँगे, तो मैं दीवार को बैतुल्लाह में शामिल कर देता और दरवाज़े को ज़मीन के बराबर कर देता।”

He transmitted that ‘Abdullāh ibn az-Zubayr said, ‘My aunt (‘Ā’ishah) told me that the Prophet ﷺ said, “‘Ā’ishah, if it had not been that your people were recently idolaters, I would have destroyed the Ka‘bah and made it level with the earth and given it two doors: an eastern door and a western door, and would have included in it six cubits of the Hījr. Quraysh made it smaller when the Ka‘bah was built.”’ ‘Urwah related from his father that ‘Ā’ishah said, ‘The Messenger of Allah ﷺ said to me, “If it had not been that your people were recently unbelievers, I would have demolished the Ka‘bah and built it on the foundations of Ibrāhīm. When Quraysh

उन्होंने रिवायत किया है कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने कहा: “मेरी फूफी (आइशा) ने मुझे बताया कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: ‘ऐ आइशा! अगर तुम्हारी क़ौम हाल ही में बुत-परस्त न रही होती तो मैं काबा को गिरा देता, उसे ज़मीन के बराबर कर देता, उसके दो दरवाज़े बनाता—एक मशरिकी और एक मगरिबी—and हिज़्र में से छह हाथ (हिस्सा) उसमें शामिल कर देता। कुरैश ने काबा की तामीर के वक़्त उसे छोटा कर दिया था।” उरवा ने अपने वालिद से रिवायत किया कि आइशा ने कहा: “रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से फ़रमाया: ‘अगर तुम्हारी क़ौम हाल ही में कुफ़्र से न निकली होती तो मैं काबा को मुनहदिम कर देता और उसे इब्राहीम की बुनियादों पर तामीर करता। जब कुरैश ने काबा बनाया तो उन्होंने उसे छोटा कर दिया, और मैं

~~~~~

built the Ka'bah, they made it smaller, and I would have given it a back door.” Al-Bukhārī has that Hishām ibn ‘Urwah said, ‘He meant a door.’ Al-Bukhārī also has ‘two doors’. This was the structure of Quraysh.

उसके लिए एक पिछला दरवाज़ा भी बना देता।” इमाम बुखारी ने नक़ल किया है कि हिशाम बिन उरवा ने कहा: “इससे मुराद एक दरवाज़ा था।” और इमाम बुखारी ने “दो दरवाज़े” भी रिवायत किए हैं। यही कुरैश की तामीर थी।

When the Syrians attacked ‘Abdullāh ibn az-Zubayr and the Ka'bah was weakened by being burned, Ibn az-Zubayr demolished it and then rebuilt it based on what ‘Ā’ishah had told him. He added to it five cubits from the Hījr so that he exposed its foundation and people looked at it. Then he built it on it. The height of the Ka'bah was eighty cubits. When he added to it, it appeared to be small and so he added ten cubits to its height. He gave it two doors: one by which to enter and one by which to leave. That is what is stated in Muslim, although the wording of reports varies.

यह रिवायत है कि जब शामीयों ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर पर हमला किया और काबा जलाए जाने के कारण कमज़ोर हो गया, तो इब्न-ए-जुबैर ने उसे मुनहदिम कर दिया। फिर उन्होंने उसे उस बयान की बुनियाद पर दोबारा तामीर किया जो हज़रत आइशा ने उन्हें बताया था। उन्होंने हिज़्र में से पाँच हाथ काबा में शामिल किए, यहाँ तक कि उसकी असली बुनियाद ज़ाहिर हो गई और लोगों ने उसे देख लिया, फिर उसी बुनियाद पर उसकी तामीर की। काबा की बुलंदी अस्सी हाथ थी। जब उन्होंने इसमें इज़ाफ़ा किया तो वह निस्बतन छोटा दिखाई देने लगा, इसलिए उन्होंने उसकी बुलंदी में मज़ीद दस हाथ का इज़ाफ़ा कर दिया। उन्होंने उसके दो दरवाज़े बनाए: एक दाख़िल होने के लिए और एक बाहर निकलने के लिए। यही

~~~~~

|  |                                                                                                   |
|--|---------------------------------------------------------------------------------------------------|
|  | <p>बात सहीह मुस्लिम में मज़कूर है, अगरचे रिवायात के अल्फ़ाज़ में कुछ इख़्तिलाफ़ पाया जाता है।</p> |
|--|---------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>Sufyān mentioned from Dāwūd ibn Shābūr that Mujāhid said, ‘When Ibn az-Zubayr wanted to demolish the Ka‘bah and rebuild it, he said to the people, “Demolish it.” They refused to demolish it, fearing that punishment would descend on them. We went out to Minā and stayed there for three days, awaiting the punishment. Ibn az-Zubayr climbed up the wall of the Ka‘bah himself. When they saw that nothing happened to him, they were bold enough to undertake that and they demolished it. When he rebuilt it, he gave it two doors: one by which to enter and one by which to leave. He added six cubits on the side of the Hījr and added nine cubits to its height.’</p> | <p>सुफ़यान ने दाऊद बिन शाबूर के वासिते से मुजाहिद से नक़ल किया है कि उन्होंने कहा: “जब इब्न-ए-जुबैर ने काबा को मुनहदिम करके दुबारा तामीर करने का इरादा किया तो उन्होंने लोगों से कहा: ‘इसे गिरा दो।’ लोगों ने इसे गिराने से इनकार कर दिया, इस अंदेशे से कि कहीं उन पर अज़ाब न नाज़िल हो जाए। हम मिना की तरफ़ निकल गए और वहाँ तीन दिन ठहरे, अज़ाब के इंतज़ार में। फिर इब्न-ए-जुबैर खुद काबा की दीवार पर चढ़ गए। जब लोगों ने देखा कि उन्हें कुछ नहीं हुआ तो उनमें भी जुरअत आ गई और उन्होंने काबा को मुनहदिम कर दिया। जब इब्न-ए-जुबैर ने उसे दुबारा तामीर किया तो उसके दो दरवाज़े बनाए: एक दाख़िल होने के लिए और एक बाहर निकलने के लिए। उन्होंने हिज़्र की जानिब से छह हाथ शामिल किए और उसकी बुलंदी में नौ हाथ का इज़ाफ़ा किया।”</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                         |                                                                                                                                     |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>Muslim said in his hadith: ‘When Ibn az-Zubayr was killed, al-Ḥajjāj wrote to ‘Abd al-Malik ibn Marwān to inform</p> | <p>सहीह मुस्लिम में यह बयान आया है: “जब इब्न-ए-जुबैर क़त्ल कर दिए गए तो हज्जाज ने अब्दुल-मलिक बिन मरवान को ख़त लिखकर इत्तिला दी</p> |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

him that Ibn az-Zubayr had rebuilt it on the foundations that had been seen by reputable people of Makkah. ‘Abd al-Malik wrote to him, “We are not concerned with any of the mess of Ibn az-Zubayr. As for what he added of the Hijr, return it as it was. Block off the door which he opened.” So he demolished it and restored it as it was.’ One version has: ‘‘Abd al-Malik said, “I do not think that Abu-l-Khubayb (i.e. Ibn az-Zubayr) heard from ‘Ā’ishah what he claimed that he heard.” Al-Hārith ibn ‘Abdullāh interjected, “Yes, I heard it from her.” He demanded, “What did you hear her say?” He said, “She said, ‘The Messenger of Allah ﷺ said, “Your people reduced its size. If it had not been that your people were recently idolaters, I would have restored what they left of it. It may occur to your people to build it. Come and I will show you what they left out of it.”’” He showed her about seven cubits.’ One

कि इब्न-ए-जुबैर ने काबा को उन बुनियादों पर दुबारा तामीर किया था जिन्हें मक्का के मुअतबर लोगों ने अपनी आँखों से देखा था। अब्दुल-मलिक ने उसे लिखा: ‘हमें इब्न-ए-जुबैर के इस सारे काम से कोई सरोकार नहीं। जहाँ तक उसने हिज्र में से जो इज़ाफ़ा किया है, उसे पहले जैसा कर दो, और जिस दरवाज़े को उसने खोला है उसे बंद कर दो।’ चुनाँचे हज्जाज ने उसे मुनहदिम किया और उसे पहले जैसी हालत पर वापस कर दिया।” एक रिवायत में है: “अब्दुल-मलिक ने कहा: ‘मैं नहीं समझता कि अबू-ल-खुबैब (यानी इब्न-ए-जुबैर) ने आइशा से वह बात सुनी हो जिसका वह दावा करता है।’ इस पर हारिस बिन अब्दुल्लाह बोले: ‘हाँ, मैंने यह बात खुद उनसे सुनी है।’ अब्दुल-मलिक ने पूछा: ‘तुमने उनसे क्या सुना?’ उन्होंने कहा: ‘मैंने उन्हें यह कहते सुना कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी क़ौम ने काबा को छोटा कर दिया। अगर यह बात न होती कि तुम्हारी क़ौम हाल ही में बुत-परस्ती से निकली है तो मैं उस हिस्से को भी शामिल कर देता जिसे उन्होंने छोड़ दिया। मुमकिन है तुम्हारी क़ौम उसे दुबारा तामीर करे;

~~~~~

variant says that ‘Abd al-Malik said, ‘If I had heard it before I demolished it, I would have left it as Ibn az-Zubayr rebuilt it’. This is what has been reported about building the Ka‘bah.

आओ, मैं तुम्हें वह हिस्सा दिखा देती हूँ जो उन्होंने छोड़ दिया था।” फिर उन्होंने तक्ररीबन सात हाथ की मिक्कदार दिखाई।” एक रिवायत में यह भी है कि अब्दुल-मलिक ने कहा: “अगर यह बात मुझे उसके मुनहदिम करने से पहले मालूम होती तो मैं उसे उसी हालत पर छोड़ देता जिस पर इब्र-ए-जुबैर ने दुबारा तामीर किया था।” यही वे रिवायात हैं जो काबा की तामीर के बारे में नक़ल की गई हैं।

It is related that Hārūn ar-Rashīd mentioned to Mālik ibn Anas that he wanted to demolish what al-Ḥajjāj had built of the Ka‘bah and to restore it to what Ibn az-Zubayr had built based on what was reported from the Prophet ﷺ and which Ibn az-Zubayr followed. Mālik said to him, ‘I beseech you by Allah, Amīr al-Mu‘minīn, do not make this House a toy for kings. Then they will all want to reduce the House and rebuild it. Then the awe that people have for it will leave their hearts.’ Al-Wāqidi mentioned from Ma‘mar that Ḥammām ibn Munabbih heard

रिवायत में आता है कि हारून अर-रशीद ने इमाम मालिक बिन अनस से ज़िक्र किया कि वे काबा के उस हिस्से को मुनहदिम करना चाहते हैं जो हज्जाज ने बनाया था, और उसे उस हालत पर वापस लाना चाहते हैं जिस पर इब्र-ए-जुबैर ने नबी ﷺ से मनकूल रिवायत की बुनियाद पर तामीर किया था, और जिस पर इब्र-ए-जुबैर ने अमल किया था। इस पर इमाम मालिक ने उनसे कहा: “मैं आपको अल्लाह का वास्ता देता हूँ, ऐ अमीरुल-मोमिनीन! इस घर को बादशाहों का खिलौना न बनाइए, वरना हर बादशाह यही चाहेगा कि काबा को गिरा कर दुबारा बनाए। फिर लोगों के दिलों से इसकी हैबत और अज़मत चली जाएगी।”

~~~~~

Abū Hurayrah say, ‘The Messenger of Allah ﷺ forbade cursing As‘ad al-Himyarī, who was Tubba‘, and was the first to put a covering over the House. He was the last Tubba‘.’ Ibn Ishāq said, ‘It was covered with Egyptian linen and then with a striped cloth. The first to use brocade was al-Hajjāj.’

वाकिदी ने मअमर के वासिते से नक़ल किया है कि हम्माम बिन मुनब्बिह ने अबू हुरैरा को यह कहते हुए सुना: “रसूलुल्लाह ﷺ ने असअद अल-हिमयरी—जो तुब्बअ था—को गाली देने से मना फ़रमाया। वही पहला शख्स था जिसने बैतुल्लाह पर गिलाफ़ चढ़ाया, और वही आखिरी तुब्बअ था।” इब्न-ए-इस्हाक ने कहा: “इब्तिदा में काबा को मिस्री कतान से ढाँपा गया, फिर धारियों वाले कपड़े से। सबसे पहले जिसने दीबाज (रेशमी ब्रोकेड) का गिलाफ़ इस्तेमाल किया, वह हज्जाज था।”

One should not take any of the kiswah of the Ka‘bah. It is a gift to it. It should not be decreased at all. Sa‘īd ibn Jubayr disliked taking any of the scent of the Ka‘bah for medicinal purposes.

काबा के गिलाफ़ (किस्वा) में से कुछ भी नहीं लेना चाहिए, क्योंकि वह काबा के लिए हदिया होता है। उसमें किसी भी तरह की कमी नहीं की जानी चाहिए। सईद बिन जुबैर काबा की खुशबू में से भी कुछ लेना नापसंद करते थे, चाहे वह इलाज़ के मक़सद से ही क्यों न हो।

The name Ismā‘īl in Syriac means ‘Listen, O God!’ ‘Īl’ in Syriac means ‘God’.

सिरयानी भाषा में इस्माइल नाम का अर्थ है: “ऐ अल्लाह! सुन”। सिरयानी भाषा में ईल का अर्थ अल्लाह होता है।

Our Lord, make us both Muslims submitted to You, and our descendants a

ऐ हमारे रब! हमें दोनों को अपना फ़रमाबरदार (मुस्लिम) बना दे, और हमारी औलाद में से भी एक

~~~~~

|                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                                              |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p><b>Muslim community submitted to You. Show us our rites of worship and turn towards Us. You are the Ever-Returning, the Most Merciful. [2:128]</b></p> | <p><b>फ़रमाबरदार (मुस्लिम) उम्मत पैदा फ़रमा। हमें हमारी इबादत के तरीक़े दिखा दे और हमारी तौबा क़बूल फ़रमा। बेशक तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है। [2:128]</b></p> |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                |                                                                           |
|----------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| <p><b>Our Lord, make us both Muslims submitted to You,</b></p> | <p><b>ऐ हमारे रब! हमें दोनों को अपना फ़रमाबरदार (मुस्लिम) बना दे,</b></p> |
|----------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>‘Muslims’ here means both in terms of faith and in terms of action, as Allah says: ‘The dīn with Allah is Islam.’ (3:19). Those who say that Islam and faith are one and the same use this as evidence. This is also supported by another āyah: ‘We brought out all the believers who were there but found in it only one house of Muslims.’ (51:35–36)</p> | <p>यहाँ “मुस्लिम” से मुराद ईमान के एतिबार से भी और अमल के एतिबार से भी मुस्लिम हैं, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “अल्लाह के नज़दीक दीन इस्लाम ही है” (3:19)। जो लोग यह कहते हैं कि इस्लाम और ईमान एक ही चीज़ हैं, वे इस आयत को दलील के तौर पर पेश करते हैं। इसकी ताईद एक दूसरी आयत से भी होती है: “फिर हमने वहाँ जितने मोमिन थे उन्हें निकाल लिया, मगर उसमें हमें मुसलमानों का सिर्फ़ एक ही घर मिला” (51:35-36)।</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                        |                                                                         |
|------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------|
| <p><b>and our descendants a Muslim community submitted to You.</b></p> | <p><b>और हमारी औलाद को भी तेरा फ़रमाबरदार मुसलमान गिरोह बना दे।</b></p> |
|------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                            |                                                                                                                                    |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>It is said that every Prophet only prayed for himself and his own community, except for Ibrāhīm who also prayed for</p> | <p>कहा जाता है कि हर नबी ने सिर्फ़ अपने लिए और अपनी ही उम्मत के लिए दुआ की, सिवाय इब्राहीम के, जिन्होंने अपनी उम्मत के साथ-साथ</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

~~~~~

this community as well as his own. It is said that He uses the partitive ‘min’ because his descendants included wrongdoers. At-Ṭabarī reported that it means the Arabs in particular. As-Suhaylī says that it means the Arabs because they are the sons of Nabt ibn Ismā‘īl or Tayman ibn Ismā‘īl. It is also said that their ancestor was Qaydar ibn Ismā‘īl. The ‘Adnānī Arabs are descended from Nabt, and the Qaḥṭānī from Qaydar or Tayman. Ibn ‘Aṭīyyah said that this is weak because its claim appeared among the Arabs and those other than them who believe.

इस उम्मत के लिए भी दुआ की। कहा जाता है कि उन्होंने हर्फ-ए-तबईज़ "मिन" इसलिए इस्तेमाल किया क्योंकि उनकी औलाद में ज़ालिम लोग भी शामिल थे। इमाम तबरी ने नक़ल किया है कि इससे मुराद ख़ास तौर पर अरब हैं। सुहैली कहते हैं कि इससे मुराद अरब ही हैं, क्योंकि वे नबत बिन इस्माइल या तैमान बिन इस्माइल की औलाद हैं। यह भी कहा गया है कि उनके जद्-ए-आला क़ैदार बिन इस्माइल थे। अदनानी अरब नबत की नस्ल से हैं, और क़ह्तानी क़ैदार या तैमान की नस्ल से। इब्न अतिय्यह ने कहा कि यह क़ौल ज़ईफ़ है, क्योंकि इसका दावा अरबों और उनके अलावा उन लोगों में भी पाया गया है जो ईमान लाए।

The word *ummah* (community) means a social grouping. It can refer to a single person since he is imitated in good, as Allah says: *Ibrāhīm was a community in himself obedient to Allah* (16:120). The Prophet ﷺ said about Zayd ibn ‘Amr, ‘He was sent as a community on his own,’ because he did not

लफ़ज़ उम्मत (जमाअत) सामाजिक समूह के अर्थ में आता है। यह एक व्यक्ति के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है, क्योंकि नेकी में उसकी अनुकरण किया जाता है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "निस्संदेह इब्राहीम स्वयं एक उम्मत थे, अल्लाह के आज्ञाकारी" (16:120)। नबी ﷺ ने ज़ैद बिन अम्र के बारे में फ़रमाया: "वह अकेले एक उम्मत के रूप में

commit *shirk* in his religion. Allah knows best. The expression can also be used in other contexts to mean region, time, or stature or the face. That is found in the following āyahs: *We found our fathers following an ummah* (43:22) meaning a religion; *This ummah of yours is one ummah* (21:92), which can mean a time; and *remembering after an ummah* (12:45), meaning ‘a time’.

उठाए जाएँगे”, क्योंकि वे अपने दीन में शिर्क नहीं करते थे। अल्लाह ही बेहतर जानता है। यह शब्द अन्य संदर्भों में भी प्रयुक्त होता है, जहाँ इससे क्षेत्र, समय, पद-मर्यादा या चेहरा भी अभिप्रेत हो सकता है। यह बात निम्नलिखित आयतों से स्पष्ट होती है: “हमने अपने बाप-दादाओं को एक उम्मत पर पाया” (43:22) अर्थात् एक दीन पर; “तुम्हारी यह उम्मत एक ही उम्मत है” (21:92), जिससे समय भी अभिप्रेत हो सकता है; और “एक अवधि के बाद उसे याद आया” (12:45), अर्थात् एक समय के बाद।

Show us our rites of worship

हमें हमारी इबादत के तरीके दिखा दे।

‘Show’ (*arinā*) is recited as *arnā* by ‘Umar ibn ‘Abd al-‘Azīz, Qatādah, Ibn Kathīr, Ibn Muḥaysin, as-Suddī, Rawḥ from Ya‘qūb, Ruways and as-Sūsī.

लफ़्ज़ “अरीना” (दिखा) को “अरना” भी पढ़ा गया है। यह क़िराअत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़, क़तादह, इब्न कसीर, इब्न मुहैसिन, सुदी, याकूब से रूह, रुवैस और सूसी से मनकूल है।

The linguistic root of the word *manāsik* (rites of worship) is *nusk* and means ‘washing’. In the Sharī‘ah it is the term used for an act of worship. Scholars disagree about what rites are meant here. It is said that it means the practices and

लफ़्ज़ मनासिक (इबादत के तरीके) का लुगवी मादा नुसुक है, जिसके मानी धोना के हैं। शरीअत में यह लफ़्ज़ इबादत के अमल के लिए इस्तेमाल होता है। अहल-ए-इल्म के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि यहाँ किन मनासिक से मुराद है।

waymarks of *hajj* as Qatādah and as-Suddī said. Mujāhid, ‘Aṭā’ and Ibn Jurayj held the view that it refers to sacrificing. It is also said to mean all the acts of worship by which Allah is worshipped. *Nāsik* means a worshipper.

कहा गया है कि इससे हज के आमाल और उसकी निशानियाँ मुराद हैं, जैसा कि क़तादह और सुद्दी ने कहा। मुजाहिद, अता और इब्न जुरैज का मौक़िफ़ यह है कि इससे कुरबानी मुराद है। यह भी कहा गया है कि इससे वे तमाम इबादात मुराद हैं जिनके ज़रिये अल्लाह की इबादत की जाती है। नासिक के मानी इबादत करने वाले के हैं।

Zuhayr ibn Muḥammad said, ‘When Ibrāhīm finished building the House, he said, “O Lord, I have finished, so show us our rites of worship!” So Allah sent Jibrīl to him and he performed the *hajj* for him. When he returned from ‘Arafah and the Day of Sacrifice came, Iblīs appeared before him and Jibrīl said, “Throw pebbles at him.” So Ibrāhīm threw seven pebbles at him. That happened for the next two days. Then he went up Thabīr and called out, “Slaves of Allah, answer!” and his call was heard by those between the seas with an atom of faith in their heart and they said, “At Your service, O

जुहैर बिन मुहम्मद कहते हैं: जब इब्राहीम ने बैतुल्लाह की तामीर मुकम्मल कर ली तो उन्होंने अज़ किया: “ऐ मेरे रब! मैंने काम पूरा कर लिया, अब हमें हमारी इबादत के तरीके दिखा दे।” चुनाँचे अल्लाह तआला ने जिब्रील को उनके पास भेजा और उन्होंने उन्हें हज कराया। फिर जब वे अरफ़ात से लौटे और यौम-ए-नहर आया तो इब्लीस उनके सामने ज़ाहिर हुआ। जिब्रील ने कहा: “इसे कंकड़ मारो।” पस इब्राहीम ने उस पर सात कंकड़ मारे। यही अमल अगले दो दिनों में भी हुआ। फिर वे जबल-ए-थबीर पर चढ़े और पुकारा: “ऐ अल्लाह के बन्दो! लब्बैक कहो!” तो उनकी आवाज़ उन सब लोगों ने सुनी जो दो समुन्द्रों के दरमियान थे और जिनके

Allah! At Your service!” Were it not for the presence of Muslims, the earth and those on it would have been destroyed. The people of Yemen were the first to answer.’

दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान था, और उन्होंने कहा: “लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक!” अगर मुसलमानों की मौजूदगी न होती तो ज़मीन और जो कुछ उस पर है सब तबाह कर दिया जाता। सबसे पहले अहल-ए-यमन ने लब्बैक कहा।

Abū Miljāz said: ‘When Ibrāhīm finished building the House, Jibrīl came to him and showed him how to do *ṭawāf* of the House (and I think he also said, ‘of Ṣafā and Marwa’). Then they went to ‘Aqabah and Shayṭān confronted them. Jibrīl took seven pebbles and gave Ibrāhīm seven pebbles. He stoned him, saying the *takbīr*. Then he told Ibrāhīm, “Stone and say the *takbīr*.” He did so with every pebble until Shayṭān retreated. Then they went to the middle Jamrah and Shayṭān confronted them. Jibrīl took seven pebbles and gave Ibrāhīm seven pebbles. He stoned him, saying the *takbīr*. Then he told Ibrāhīm, “Stone and say the *takbīr*.” He did so with every pebble until Shayṭān

अबू मिलजाज़ कहते हैं: जब इब्राहीम ने बैतुल्लाह की तामीर मुकम्मल कर ली तो जिब्रील उनके पास आए और उन्हें बैतुल्लाह का तवाफ़ करना सिखाया (और मेरा खयाल है कि उन्होंने यह भी कहा: सफ़ा और मरवा का तवाफ़)। फिर वे अक़बह की तरफ़ गए तो शैतान उनके सामने आ गया। जिब्रील ने सात कंकरियाँ लीं और इब्राहीम को भी सात कंकरियाँ दीं। इब्राहीम ने तकबीर कहते हुए उसे कंकरियाँ मारीं। फिर जिब्रील ने इब्राहीम से कहा: “कंकरियाँ मारो और तकबीर कहो।” पस उन्होंने हर कंकरी के साथ तकबीर कही, यहाँ तक कि शैतान पीछे हट गया। फिर वे दरमियानी जमरह के पास आए तो शैतान फिर सामने आ गया। जिब्रील ने सात कंकरियाँ लीं और इब्राहीम को भी सात कंकरियाँ दीं। इब्राहीम ने तकबीर कहते हुए उसे कंकरियाँ

~~~~~

retreated. Then they went to the furthest *jamrah* and Shayṭān confronted them. Jibrīl took seven pebbles and gave Ibrāhīm seven pebbles. He stoned him, saying the *takbīr*. Then he told Ibrāhīm, “Stone and say the *takbīr*.” He did so with every pebble until Shayṭān retreated. Then he took him to Jam‘ and said, “Here the people join the prayers.” Then he took him to ‘Arafāt and said, “Do you recognise (‘arafta)?” “Yes,” he answered. That is why it is called ‘Arafāt.’ It is also related that he repeated the question three times and it means Minā, Jam‘ and this (‘Arafāt).

मारीं। फिर जिब्रीलं ने कहा: “कंकरियाँ मारो और तकबीर कहो।” उन्होंने हर कंकरी के साथ ऐसा किया, यहाँ तक कि शैतान पीछे हट गया। फिर वे आखिरी जमरह के पास आए तो शैतान फिर सामने आ गया। जिब्रीलं ने सात कंकरियाँ लीं और इब्राहीमं को भी सात कंकरियाँ दीं। इब्राहीमं ने तकबीर कहते हुए उसे कंकरियाँ मारीं। फिर जिब्रीलं ने कहा: “कंकरियाँ मारो और तकबीर कहो।” उन्होंने हर कंकरी के साथ ऐसा किया, यहाँ तक कि शैतान पीछे हट गया। इसके बाद जिब्रीलं उन्हें जम‘ (मुज़दलिफ़ा) ले गए और कहा: “यहीं लोग नमाज़ों को जमा करते हैं।” फिर वे उन्हें अरफ़ात ले गए और कहा: “क्या तुमने पहचान लिया (अरफ़ता)?” उन्होंने कहा: “हाँ।” इसी वजह से इसे अरफ़ात कहा जाता है। यह भी रिवायत है कि जिब्रीलं ने यह सवाल तीन बार दोहराया, और इससे मुराद मिना, जम‘ (मुज़दलिफ़ा) और यही (अरफ़ात) हैं।

Khuṣayf ibn ‘Abd ar-Raḥmān reported that Mujāhid said, “When Ibrāhīm said, ‘Show us our rites,’ it means Ṣafā and Marwah, which are the

ख़ुसैफ़ बिन अब्दुर्रहमान रिवायत करते हैं कि मुजाहिदं ने कहा: “जब इब्राहीमं ने कहा: हमें हमारी इबादत के तरीक़े दिखा दे तो इससे मुराद सफ़ा और मरवा हैं, और यही वे

~~~~~

‘waymarks of Allah’ mentioned in the text of the Qur’an.” Then Jibrīl took him out. When he passed by the Jamrat ‘l-‘Aqabah, Iblīs was on it and Jibrīl told him, “Say the *takbīr* and stone him.” Then Iblīs went on top of the middle one and Jibrīl told him, “Say the *takbīr* and stone him.” Then the same thing happened with the furthest Jamrah. Then he took him to the Mash‘ar al-Harām and then to ‘Arafāt. He asked him, “Do you recognise (‘arafta) what I have shown you?” “Yes,” he answered. That is why it is called ‘Arafāt. Then he told him, “Announce the ḥajj to people.” He asked, “What do I say?” The answer was, “Say: ‘People! Respond to your Lord!’ three times.” He did so and they said, “At Your service, O Allah, at Your service!” Whoever answered on that day was a ḥājj. Another variant said that he turned in a circle so that he called in every direction and the people in and the east and the west

अल्लाह की निशानियाँ हैं जिनका ज़िक्र कुरआन-ए-मजीद में आया है।” फिर जिब्रील० उन्हें साथ लेकर निकले। जब वे जमरतुल-अक़बह के पास पहुँचे तो इब्लीस वहाँ मौजूद था। जिब्रील० ने कहा: “तकबीर कहो और उसे कंकड़ मारो।” फिर इब्लीस दरमियानी जमरह पर चला गया तो जिब्रील० ने कहा: “तकबीर कहो और उसे कंकड़ मारो।” फिर यही मामला आखिरी जमरह के साथ हुआ। इसके बाद जिब्रील० उन्हें मशअरुल-हराम ले गए, फिर अरफ़ात की तरफ़ ले गए, और उनसे पूछा: “क्या तुमने पहचान लिया (अरफ़ात) जो मैंने तुम्हें दिखाया है?” उन्होंने कहा: “हाँ।” इसी वजह से उसका नाम अरफ़ात रखा गया। फिर जिब्रील० ने उनसे कहा: “लोगों में हज का ऐलान करो।” उन्होंने पूछा: “मैं क्या कहूँ?” जवाब दिया गया: “कहो: ऐ लोगो! अपने रब की पुकार पर लब्बैक कहो!” यह ऐलान तीन बार किया गया। उन्होंने ऐसा किया तो लोगों ने कहा: “लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक!” जो शख्स उस दिन लब्बैक कहकर जवाब देता है, वही हाजी है। एक दूसरी रिवायत में आया है कि इब्राहीम० चारों तरफ़ घूम-घूम कर ऐलान करते रहे ताकि

~~~~~

responded. The mountains bowed so that the sound went a great distance.

हर दिशा में पुकार पहुँचे। चुनाँचे मशरिक़ और मगरिब में रहने वालों ने भी लब्बैक कहा। पहाड़ झुक गए ताकि आवाज़ दूर-दूर तक पहुँच जाए।

Muhammad ibn Ishāq said, “When Ibrāhīm, the Friend of Allah, finished building the Sacred House, Jibrīl came to him and said, ‘Go around it seven times.’ So he and Ismā‘īl went around it seven times, greeting all the corners on every circuit. When they finished the seven, they prayed two rak‘ahs at the Maqām. Jibrīl rose and showed them all the rites: Ṣafā and Marwah, Minā and Muzdalifah.” He continued, “When he entered Minā and descended from ‘Aqabah, Iblīs appeared to him...”

मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं: “जब इब्राहीम, खलीलुल्लाह, ने बैत-ए-हराम की तामीर मुकम्मल कर ली तो जिब्रील उनके पास आए और कहा: ‘इसके गिर्द सात चक्कर लगाओ।’ चुनाँचे उन्होंने और इस्माईल ने इसके गिर्द सात चक्कर लगाए, और हर चक्कर में तमाम कोनों को सलाम किया। जब सात चक्कर पूरे हो गए तो उन्होंने मक़ाम-ए-इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ अदा की। फिर जिब्रील उठे और उन्हें तमाम मनासिक दिखाए: सफ़ा और मरवा, मिना और मुज़दलिफ़ा।” वे आगे कहते हैं: “जब इब्राहीम मिना में दाख़िल हुए और अक़बह से उतरे तो इब्लीस उनके सामने ज़ाहिर हुआ ...”

Ibn Ishāq said, “I heard that Ādam used to greet all of the corners before Ibrāhīm.” He said that Ishāq and Sārah performed ḥajj from Syria. Ibrāhīm used to perform ḥajj every year on Burāq and the

इब्र इस्हाक़ कहते हैं: “मैंने सुना है कि इब्राहीम से पहले आदम तमाम कोनों को सलाम किया करते थे।” वे यह भी कहते हैं कि इस्हाक़ और सारा ने शाम से हज अदा किया। इब्राहीम हर साल बुराक़ पर सवार होकर हज किया करते थे, और

~~~~~

Prophets and nations after him performed ḥajj.

उनके बाद आने वाले अंबिया और उम्मतों ने भी हज अदा किया।

Muhammad ibn Sābit related that the Prophet ﷺ said, “When the nation of one of the Prophets was destroyed, he would go to Makkah and worship there along with those who believed with him until they died. Nūḥ, Hūd and Ṣāliḥ died there and their graves are between Zamzam and the Ḥijr.” Ibn Wahb mentioned that Shu‘ayb died in Makkah with the believers with him. Their graves are located in the western part of Makkah between the Dār an-Nadwah and the Banū Sahm. Ibn ‘Abbās said, “There are only two graves in the Masjid al-Ḥarām: that of Ismā‘īl and of Shu‘ayb. Ismā‘īl’s grave is in the Ḥijr and Shu‘ayb’s is opposite the Black Stone.” ‘Abdullāh ibn Ḍamrah as-Salūlī said, “Between the Corner and the Maqām are the graves of ninety-nine Prophets who came on ḥajj and were buried there.”

मुहम्मद बिन साबित रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब किसी नबी की क़ौम हलाक कर दी जाती थी तो वह मक्का आ जाते थे और अपने साथ ईमान लाने वालों के साथ वहाँ इबादत करते रहते थे, यहाँ तक कि वहीं उनका इंतिक़ाल हो जाता था। नूहं, हूदं और सालेहं वहीं वफ़ात पाए, और उनकी क़ब्रें ज़मज़म और हिज़्र के दरमियान हैं।” इब्न वहब ने ज़िक्र किया है कि शुऐबं भी अपने साथ ईमान लाने वालों के साथ मक्का में वफ़ात पाए। उनकी क़ब्रें मक्का के मगरिबी हिस्से में दारुन-नदवा और बनू सहम के दरमियान वाक़े हैं। इब्न अब्बासुं ने कहा: “मस्जिदुल-हराम में सिर्फ़ दो ही क़ब्रें हैं: एक इस्माईलुं की और एक शुऐबुं की। इस्माईलुं की क़ब्र हिज़्र में है और शुऐबुं की हजर-ए-असवद के मुक़ाबिल है।” अब्दुल्लाह बिन ज़मरह अस-सलूलि कहते हैं: “रुक्न और मक़ाम के दरमियान निन्यानवे नबियों की क़ब्रें हैं, जो हज के लिए आए थे और वहीं दफ़न किए गए।”

and turn towards Us.

और हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा।

There is disagreement about what this means since both Ibrāhīm and Ismā‘īl were Prophets protected from wrong action. A group say that they were asking for constancy and continuance, not for forgiveness from wrong actions. This is good but even better than that is the interpretation which maintains that, when they had learned the practices and built the House, they wanted to make that clear to people and acquaint them with the rites they had to perform and inform them that this place of standing and those places are places for intercession for wrong actions and seeking repentance. It is said that it means: ‘Turn towards the wrongdoers among our community.’

इसके मफ़हूम में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, क्योंकि इब्राहीम और इस्माईल दोनों नबी थे और गुनाह से महफूज़ थे। एक गिरोह का कहना है कि वे गुनाहों से मआफ़ी नहीं माँग रहे थे, बल्कि साबित-क़दमी और दवाम की दुआ कर रहे थे। यह बात दुरुस्त है, लेकिन इससे भी बेहतर वह तफ़सीर है जिसके मुताबिक़ जब उन्होंने मनासिक सीख लिए और बैतुल्लाह की तामीर कर ली, तो उनकी मुराद यह थी कि इन उमूर को लोगों पर वाज़ेह कर दिया जाए, उन्हें उन मनासिक से आगाह किया जाए जो उन पर लाज़िम हैं, और उन्हें बताया जाए कि यह मक़ाम-ए-क़ियाम और ये मक़ामात ऐसे हैं जहाँ गुनाहों पर शफ़ाअत और तौबा तलब की जाती है। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है: “हमारी उम्मत में से गुनाहगारों की तरफ़ रुजू फ़रमा।”

Our Lord, raise up among them a Messenger from them to recite Your Signs to them and teach them the Book and Wisdom and purify them. You are the Almighty, the

ऐ हमारे रब! उन्हीं में से एक रसूल उनमें मबऊस फ़रमा जो उन पर तेरी आयात तिलावत करे, उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे, और उन्हें पाकीज़ा बनाए।

All-Wise.’ [2:129]

बेशक तू ही गालिब, हिकमत वाला है। [2:129]

Our Lord, raise up among them a Messenger from them

ऐ हमारे रब! उन्हीं में से एक रसूल उनमें मबऊस फ़रमा।

Khālid ibn Mad‘ān related that a group of the Companions of the Prophet ﷺ said, ‘Messenger of Allah, tell us about yourself.’ The Prophet ﷺ replied, ‘Indeed, I am the supplication of my father Ibrāhīm and the good news of ‘Īsā.’ The word rasūl (Messenger) means someone who is sent and comes from the verb arsala meaning to send out.

ख़ालिद बिन मअदान रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ के सहाबाँ के एक गिरोह ने अर्ज़ किया: “या रसूलल्लाह! हमें अपने बारे में बताइए।” नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं अपने वालिद इब्राहीम की दुआ और ईसा की बशारत हूँ।” लफ़्ज़ रसूल उस शख्स को कहते हैं जिसे भेजा जाए, और यह फ़ेअल अर्सला से माखूज़ है, जिसके मानी भेजने के हैं।

and teach them the Book and Wisdom

और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे।

The ‘Book’ is the Qur’an and the ‘Wisdom’ (ḥikmah) is recognition and acceptance of the dīn, grasping its interpretation and understanding it, which is by an innate faculty and light from Allah. Mālik stated that and Ibn Wahb related it from him. Qatādah said that the ‘Wisdom’ is the Sunnah and clarification

“किताब” से मुराद कुरआन है और “हिकमत” (ḥikmah) से मुराद दीन की मारिफ़त और उसका क़बूल करना, उसकी तफ़्सीर को समझना और उसका फ़हम हासिल करना है। यह सब अल्लाह की तरफ़ से अता की गई फ़ितरी सलाहियत और नूर के ज़रिये होता है। इमाम मालिक ने यही बात बयान की है और इब्न वहब ने इसे उनसे रिवायत किया

of the laws of the Shari‘ah. It is said that it refers to the judgments and rulings derived from it. The meanings are close. Teaching is ascribed to the Prophet ﷺ since he gives the commands which are followed and taught us how to look at the Revelation Allah gave him. It is said that the ‘Book’ means the meaning of the words and the ‘Wisdom’ refers to the judgments derived from it. Allah means the unrestricted and restricted, detailed and general, ambivalent and specific.

है। क़तादहँ ने कहा है कि “हिकमत” से मुराद सुन्नत और शरीअत के अहकाम की तौज़ीह है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद वे फ़ैसले और अहकाम हैं जो इससे मुस्तनत होते हैं। ये तमाम मआनी एक-दूसरे के करीब हैं। तालीम की निस्बत नबी ﷺ की तरफ़ इसलिए की गई है कि वही आम्र देते हैं जिनकी पैरवी की जाती है, और उन्होंने हमें यह सिखाया कि अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गई वही को किस तरह समझा जाए। यह भी कहा गया है कि “किताब” से अल्फ़ाज़ के मआनी मुराद हैं और “हिकमत” से उनसे अख़ज़ किए गए अहकाम मुराद हैं— यानी मुतलक़ व मुक़य्यद, मुजमल व मुफ़स्सल, और मुतशाबिह व मुखसूस सब का बयान।

and purify them

और उन्हें पाकीज़ा बनाए।

...from the filth of idolatry, as Ibn Jurayj and others said. Zakāh is purification. It is said that the Signs are the recitation of the words, the Book is the meaning of the words, and Wisdom is judgment. It is what Allah means in the address of undefined and defined,

...यानी शिर्क की गंदगी से पाक करना, जैसा कि इब्न जुरैजँ और दूसरे अहल-ए-इल्म ने कहा है। ज़कात के मानी भी पाकीज़गी के हैं। यह भी कहा गया है कि आयात से मुराद अल्फ़ाज़ की तिलावत है, किताब से मुराद उन अल्फ़ाज़ के मआनी हैं, और हिकमत से मुराद अहकाम व फ़ैसले हैं। यही वह

~~~~~

explained and unexplained, general and specific. Allah knows best.

मफ़हूम है जो अल्लाह तआला के कलाम में मुतलक़ व मुक़य्यद, मुबहिम व वाज़ेह, और आम व ख़ास के बयान से मुराद है। अल्लाह ही बेहतर जानता है।

**You are the Almighty, the All-Wise.'**

**तू ही ग़ालिब है, हिकमत वाला है।**

The Almighty (al-'Azīz) is the One whom no one can overpower. Ibn Kaysān said that it means the One whose power extends to everything as evinced by Allah's words: 'Allah cannot be withstood in any way, either in the heavens or on earth.' (35:44) It is also said that it means the One Who has no like, the Incomparable. Al-Kisā'ī said that it means the Conqueror as seen in His words: 'He got the better of me ('azzanī) with his words.' (38:23) It is said that it is the One Who has no like.

अज़ीज़ (अल-'अज़ीज़) वह ज़ात है जिस पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। इब्न-ए-क़ैसान ने कहा है कि इससे मुराद वह है जिसकी कुदरत हर चीज़ पर मुहीत है, जैसा कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान से ज़ाहिर होता है: "अल्लाह को न आसमानों में कोई अज़िज़ कर सकता है और न ज़मीन में" (35:44)। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद वह है जिसकी कोई मिसाल नहीं, यानी बे-मिसाल। किसाई ने कहा है कि इसके मानी ग़ालिब आने वाला हैं, जैसा कि अल्लाह तआला के क़ौल में है: "उसने गुफ़्तगू में मुझ पर ग़लबा पा लिया" (38:23)। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद वह ज़ात है जिसकी कोई नज़ीर नहीं।

~~~~~